mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-148 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रुपये

सतना

31 मई 2025 शनिवार

दैनिक

मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

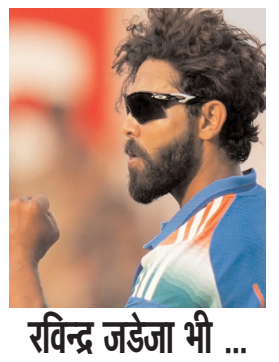

रविन्द्र जडेजा भी ...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

इंडोनेशिया में धंस गई पत्थर की खदान, चपेट में आने से 10 लोगों की मौत

बांडुंग (एजेंसी)। इंडोनेशिया के पश्चिम जावा प्रांत के सिरेबोन जिले में शुक्रवार को एक प्राकृतिक पत्थर की खदान धंस गई, जिसमें कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और 6 श्रमिक अब भी लापता हैं। स्थानीय अधिकारियों ने इस दर्दनाक हादसे की पुष्टि की है। स्थानीय पुलिस प्रमुख सुमारनी ने बताया कि हादसा उस वक्त हुआ, जब खदान का ऊपरी हिस्सा अचानक धंसा गया। घटना के समय वहां दो दर्जन से अधिक श्रमिक काम कर रहे थे। हादसे के बाद कई लोग मलबे में दब गए। मौके पर राहत और बचाव दल काम कर रहा है। प्राथमिक सूचना के अनुसार बचाव दल ने अब तक एक दर्जन घायलों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है, जिनमें से कुछ

की हालत गंभीर है। सुमारनी ने कहा, ÷हम फिलहाल खदान धंसने के कारणों की जांच कर रहे हैं और मालिक व श्रमिकों से पूछताछ की जा रही है।÷ उन्होंने बताया कि पुलिस, आपातकालीन कर्मी, सैनिक और स्वयंसेवक मिलकर पांच उत्खनन मशीनों की मदद से लापता लोगों की तलाश कर रहे हैं, लेकिन ढीली मिट्टी के कारण अभियान में बाधाएं आ रही हैं क्योंकि इससे भूस्खलन का खतरा बढ़ गया है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी के प्रवक्ता अब्दुल मुहरी ने बताया कि अंधेरा हो जाने के कारण शुक्रवार शाम को तलाशी अभियान रोक दिया गया है। अब शनिवार तड़के फिर इसे शुरू किया जाएगा। अभियान के दौरान तीन उत्खनन मशीनें और छह ट्रक भी मलबे में दबे पाए गए हैं, जिनकी खोज जारी है। शुक्रवार दोपहर तक बचावकर्मियों ने 10 शव बरामद किए, जबकि छह घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

नाइजीरिया में भयानक बाढ़ से 88 लोगों की मौत

अबुजा (एजेंसी)। नाइजीरिया में मूसलाधार बारिश के चलते उसके कई इलाके भयानक बाढ़ की चपेट में आ गए हैं। नाइजर प्रांत के मोक्वा शहर में बाढ़ के कारण कम से कम 88 लोगों की मौत हो गई। जबकि कई लोग लापता बताए जा रहे हैं। नेशनल इमरजेंसी मैनेजमेंट स्टेट के हुसैनी ईसा ने कहा कि कई लोग अब भी फंसे हुए हैं और बचाव कार्य जारी है। पहले की खबरों में कहा गया था कि कम से कम 20 लोगों की मौत हुई है। मौतों की संख्या अभी तेजी से बढ़ने की आशंका है। बताया जा रहा है कि हजारों

लोग असुरक्षित स्थानों पर फंसे हैं, जिन तक मदद नहीं पहुंच पा रही है। वहीं काफी संख्या में लोग लापता भी बताए जा रहे हैं। इसाह ने एपी को बताया, ''मृतकों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। अब तक 88 शव बरामद किए गए हैं।'' स्थानीय निवासियों और सरकारी अधिकारियों के अनुसार कई घंटों तक हुई मूसलाधार बारिश के कारण बाढ़ आई। पानी भर जाने से पास में एक बांध टूट गया जिससे स्थिति और खराब हो गई।

6.62 लाख रुपये की पकड़ी गई प्रतिबंधित ई-सिरगेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। लाखों रुपये की कीमत की विभिन्न अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों की 388 प्रतिबंधित ई-सिगरेट व 8,000 अन्य अवैध सिगरेट को जब्त किया गया है। इन प्रतिबंधित सिगरेट की कीमत 6.62 लाख रुपये है। पुलिस ने इस मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार भी किया है। 6.62 लाख रुपये की प्रतिबंधित ई-सिगरेट राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से जब्त की गई है। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान शिवम (22) के रूप में हुई है, जिसे 24 मई को द्वारका के सेक्टर-12 में स्थित एक दुकान पर छापेमारी के बाद गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने 93 प्रतिबंधित ई-सिगरेट बरामद की हैं। शिवम से पूछताछ के बाद पुलिस को उत्तम नगर स्थित उसके घर से ई-सिगरेट का एक बड़ा जखीरा मिला है। जहां से 295 ई-सिगरेट तथा 8,000 प्रतिबंधित सिगरेट बरामद की गई। अधिकारी ने बताया, %प्रारंभिक मूल्यांकन में जब्त की गई ई-सिगरेट की कीमत 6.62 लाख रुपये आंकी गई है। जब्त सिगरेट के पैकेटों पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी वैधानिक स्वास्थ्य चेतावनी नहीं पाई गई। पुलिस ने कहा कि शिवम के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर दी गई है। पूछताछ के दौरान शिवम ने पिछले तीन सालों से यह अवैध कारोबार करने की बात कबूल की है।

शुक्रवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ का दौरा किया

जिस गुरुद्वारे पर पाकिस्तान ने किया था हमला, वहां अमित शाह ने मत्था टेका

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में भारत के सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पीओके में स्थित उसके आतंकी संगठनों पर कार्रवाई की थी। आतंकियों पर हमले से बौखलाए पाकिस्तान ने इसके बाद जम्मू-कश्मीर में एलओसी और सीमा पर भारतीय नागरिकों ठिकानों पर हमले शुरू कर दिए थे जिसमें कई लोगों की मौत भी हो गई थी। पाकिस्तान के इस हमले में पुंछ में स्थित सिंह सभा गुरुद्वारे को भी निशाना बनाया था। पाकिस्तान द्वारा गुरुद्वारे पर किए गए इस कायराना हमले में 4 सिखों की मौत हो गई थी। अब शुक्रवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ का दौरा किया है और सिंह सभा गुरुद्वारे जाकर वहां मत्था भी टेका है। केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने पुंछ में सिंह सभा गुरुद्वारा का दौरा किया और वहां मत्था टेका। ये गुरुद्वारा पाकिस्तान की ओर से सीमा पार से की गई गोलीबारी से प्रभावित हुआ था। इसके

बाद अमित शाह ने पुंछ में गीता भवन मंदिर का दौरा किया और पूजा-अर्चना की तथा पाकिस्तान द्वारा सीमा पार से गोलीबारी के कारण मंदिर को हुए नुकसान का निरीक्षण भी किया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पुंछ में उन्होंने गोलाबारी से प्रभावित लोगों से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने निर्दोष लोगों पर हमला किया। हमारे धार्मिक स्थानों पर हमला किया। इस कारण हमारे नागरिक हताहत हुए। अमित शाह ने कहा कि हम भारत के नागरिकों, सेना या भारत की सीमा पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण सहन नहीं करेंगे। अमित शाह ने पुंछ के लोगों से कहा कि आपके परिवार की जो क्षति हुई है, इसमें आपके साथ पूरा देश चट्टान की तरह खड़ा है।

दरअसल, 22 अप्रैल को पाकिस्तान ने पहलगाम में आतंकी हमला करवाया। इसमें 26 लोगों की मौत हुई हो गई। इसके जवाब में भारत की सेनाओं ने 6-7 मई की रात ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया और पाकिस्तान व पीओके के भीतक आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया।

लुटरे ने घर के सामने बैठे बुजुर्ग से की दिनदहाड़े लूट

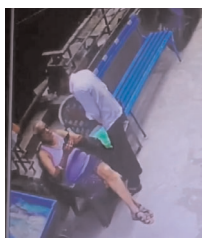

दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में बदमाश और लूटरों को अब पुलिस का खौफ नहीं रह गया है, आलम यह ही कि बदमाश घर के सामने आकर लूटपाट कर लेते हैं और पुलिस बस थाने में ही बैठी रह जाती है। ताजा मामला 28 मई का सामने आ रहा है, जहां एक बदमाश अपने घर के सामने बैठे एक शख्स की सोने की चेन लूटकर भाग जाता है, इसकी सीसीटीवी फुटेज अब सामने आया है, जिसमें साफ दिख रहा कि लुटेरे को किसी चीज का भय नहीं है। घटना

दिल्ली के पुल पहलादपुर इलाके की है, जहां यह हैरान कर देने वाली घटना घटी है। सीसीटीवी में दिख रहा कि एक बुजुर्ग शख्स अपने घर बाहर बैठा आराम कर रहा था, तभी बुजुर्ग के पास वह लुटेरा आया और उससे कहीं का पता पूछने लगा। जैसे ही बुजुर्ग उसकी मदद के लिए थोड़ा झुका फिर लुटेरे ने मौका देखकर बुजुर्ग की चेन छीनने की कोशिश की, शायद पहली बार में चेन झीन न सका तो दोबारा बुजुर्ग के पास आया और चेन छीन कर भाग गया। सीसीटीवी के मुताबिक, ये घटना 28 मई को शाम 5.50 मिनट पर हुई। आप इसी बात से अंदाजा लगा सकते है कि दिल्ली में बदमाश किस कदर बेखौफ है। लोग अपने घर के बाहर भी सुरक्षित नहीं है।

लाहौर में ट्रेनिंग लेकर की भारतीय सेना के स्टेशन और आर्मी मूवमेंट की जासूसी

कासिम से पूछताछ में हुए बड़े खुलासे

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद से पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां भारत के विभिन्न शहरों से पाकिस्तान से जुड़े जासूसों को गिरफ्तार कर रही है। इसी क्रम में सुरक्षा एजेंसियों ने हाल ही में राजस्थान से कासिम नाम के शख्स को गिरफ्तार किया था। कासिम से अब दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने भी पूछताछ की है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने जासूसी कांड में पकड़े कासिम पर बड़ा खुलासा किया है। कासिम से पूछताछ में खुलासा हुआ है कि उसने लाहौर के आर्मी कैंप में ट्रेनिंग ली थी। उसे ढ्ढस्ढ्ढ के 3 अफसरों ने ट्रेनिंग दी थी। जांच में सामने आया है कि 3 ISI के अधिकारी कासिम समेत कुछ आरोपियों को पाकिस्तान में ट्रेनिंग दे रहे थे। इनमें से दो ढ्ढस्ढ्ढ अधिकारियों का कोड नेम शाहजी और ताऊजी था जो ट्रेनिंग देने में शामिल थे जबकि एक ISI अधिकारी की पहचान वकास के तौर हुई है। ISI के इस जासूसी रैकेट में स्पेशल सेल को 2 और आरोपियों की

तलाश है जिसमें से एक का नाम हसीन है जो ढ्ढस्ढ्ढ के हैंडलर्स को सीक्रेट जानकारी पहुंचा रहा था। फिलहाल हसीन फरार है दोनों आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए रेड की जा रही है। आरोपी अलवर के आर्मी स्टेशन की जासूसी कर रहे थे। आर्मी की गाड़ियों की मूवमेंट की तस्वीरें खींच रहे थे और मूवमेंट की टाइमिंग नोट कर रहे थे।

हो सकता है कि इस बार ओपनिंग नेवी के हाथों हो

INS विक्रांत से राजनाथ ने पाकिस्तान को दिया संदेश

मुंबई (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आज INS विक्रांत के दौरे के दौरान भारतीय नौसेना की ताकत और आतंकवाद के खिलाफ भारत की कठोर नीति को लेकर पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया। 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता के बाद नौसैनिकों और अधिकारियों का हौसला बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय नौसेना ने अपनी 'साइलेंट सर्विस' से पाकिस्तानी सेना को 'बोतल में बंद' रखने में कामयाबी हासिल की है। रक्षा मंत्री ने अपने संबोधन में कहा, जरा सोचिए कि जो खामोश रहकर भी किसी देश की फौज को 'बोतल में बंद' रख सकता है, वह जब बोलेगा, तो क्या नजारा होगा? इस बार तो पाकिस्तान को भारतीय नौसेना की फायर पावर का सामना नहीं करना पड़ा, मगर दुनिया जानती है कि अगर पाकिस्तान ने कोई नापाक हरकत की, तो हो सकता है कि इस बार ओपनिंग हमारी नेवी के हाथों से हो। रक्षा मंत्री ने भारतीय नौसेना की ताकत को रेखांकित करते हुए कहा, पाकिस्तान इस बात को गांठ बांध कर रखे

कि हमारी नेवी अगर एक ओर समंदर की तरह शांत है, तो दूसरी ओर वह समंदर की ही तरह सुनामी लाने की भी क्षमता रखती है। उन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' में नौसेना की भूमिका की सराहना की। माना जा रहा है कि ढ्ढहृस्-विक्रांत जैसे स्वदेशी विमानवाहक पोत पर रक्षा मंत्री का दौरा और उनका संबोधन नौसेना के जवानों का मनोबल बढ़ाने के की दृष्टि से काफी अहम है।

राजनाथ ने पाकिस्तान को दिया ये मैसेज

रक्षा मंत्री ने पाकिस्तान को आतंकवाद के मुद्दे पर सख्त लहजे में चेतावनी दी। उन्होंने कहा, पाकिस्तान को यह साफ़ समझ लेना चाहिए कि आतंकवाद का जो ख़तरनाक खेल वह आज़ादी के समय से खेलता आ रहा है, उसकी मियाद अब ख़त्म हो चुकी है। अब जब भी पाकिस्तान भारत के ख़िलाफ़ किसी आतंकवादी हरकत को शह देगा, तो न केवल उसका ख़ामियाज़ा उसे भुगतना पड़ेगा, बल्कि हर बार की तरह उसे मात का भी सामना करना पड़ेगा।

फ्रूट जूस के पैकेट में मिला मरा हुआ चूहा

पैकेट खोला तो परिवार के उड़े होश

इंदौर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक वीडियो सामने आया है, जिसमें देखा जा सकता है कि फ्रूच जूस के पैकेट में मरा हुआ चूहा पड़ा हुआ है। पीड़ित ने इसका वीडियो बनाते हुए अपनी पीड़ा जाहिर की है, जो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। बताया जा रहा है कि फ्रूट जूस का यह पैकेट शख्स ने ऑनलाइन मंगवाया था। हालांकि जब पैकेट खोलकर देखा गया तो उसमें मरा हुआ चूहा निकला, जिससे हड़कंप मच गया। पीड़ित ने कंपनी के मेल पर शिकायत की है, लेकिन कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला है। दरअसल, इंदौर के द्वारकापुरी इलाके में रहने वाले व्यापारी विकास गोस्वामी ने ऑनलाइन शॉपिंग साइट से फ्रूट जूस के दो पैकेट ऑर्डर किए थे। इनमें से एक पैकेट में मरा हुआ चूहा मिलने का मामला सामने आया है। विकास गोस्वामी ने बताया कि

उनकी भंवरकुआं इलाके में गिफ्ट की दुकान है। 1 मई को उन्होंने फ्रूट जूस के दो पैकेट ऑर्डर किए थे, क्योंकि पैकेट पर डिस्काउंट चल रहा था। उन्हें 4-5 मई को जूस के पैकेट डिलीवर हुए। इनमें से एक पैकेट उन्होंने परिवार के साथ पी लिया, जबकि दूसरा पैकेट फ्रिज में रख दिया।

उन्होंने बताया कि 10-15 मई के बीच उन्होंने दूसरा पैकेट भी खोला और परिवार के साथ मिलकर जूस पिया। उनके परिवार में उनकी पत्नी और सात साल का बेटा भी शामिल हैं। जूस पीने के बाद पैकेट फिर से फ्रिज में रख दिया गया। हालांकि 25 मई को जब विकास ने फ्रिज से पैकेट निकाला, तो वह जम गया था। पैकेट को काटने पर परिवार दंग रह गया। जमे हुए जूस के अंदर एक काली वस्तु नजर आई, जिसे करीब से देखने पर पता चला कि वह मरा हुआ चूहा था। इस घटना के बाद परिवार के सदस्यों के होश उड़ गए। विकास ने इस पूरे वाकये का वीडियो भी बनाया और संबंधित कंपनी को मेल कर शिकायत दर्ज कराई। हालांकि कंपनी की ओर से जो जवाब मिला, वह उन्हें संतोषजनक नहीं लगा।

हाजीपुर में पुलिस कस्टडी में शख्स की मौत पर हंगामा, दरोगा को पीटा

हाजीपुर (एजेंसी)। बिहार के हाजीपुर में पुलिस कस्टडी में कथित तौर पर एक कैदी की मौत पर भारी हंगामा हुआ। मौत के बाद परिजनों और ग्रामीणों ने हाजीपुर महनार बाजार के मुख्य सड़क आगजनी किया और रोड जाम कर दिया। भीड़ बीच सड़क पर दरोगा की पिटाई भी कर दी। दरोगा की पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर अब तेजी से वायरल हो रहा है। घटना हाजीपुर के महनार थाना क्षेत्र के फतेहपुर की है। जानकारी के

अनुसार, 54 वर्षीय अशोक चौधरी को पुलिस ने शराब तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया था। आरोप है कि पुलिस की कस्टडी में अशोक की पिटाई की गई। एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें अशोक लड़खड़ाते हुए दिख रहा है। वह पुलिस से रहम की भीख भी मांगते दिख रहा है, लेकिन दो पुलिसकर्मी से जबरन ले जाते दिख रहे हैं। परिजनों का आरोप है कि पुलिसकर्मियों ने अशोक की जमकर पिटाई की। इलाज के दौरान अशोक ने दम तोड़ दिया।

अंकिता की मां ने कहा-अगर दोषियों को फांसी मिलती तो संतुष्टि होती

देहरादून(एजेंसी)। उत्तराखंड के चर्चित अंकिता भंडारी हत्याकांड में शामिल दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के बाद अंकिता के परिजनों का बयान सामने आया है। अंकिता की मां सोनी देवी ने कहा कि अगर दोषियों को फांसी की

- **अंकिता भंडारी हत्याकांड में दोषियों को आजीवन कारावास**

सजा मिलती तो संतुष्टि होती। इतना कहते ही अंकिता की मां की आंखों से आंसू छलक आए। कोटद्वार की एडिशनल डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन कोर्ट ने अंकिता भंडारी हत्याकांड के मुख्य आरोपी पुलकित आर्य सहित तीनों आरोपियों को शुक्रवार को दोषी ठहराते हुए आजीवन कठोर कारावास की सजा सुनाई है।कोर्ट का फैसला आने के बाद अंकिता की मां ने कहा कि कहा कि अभी बड़ी लड़ाई लड़नी है ताकि हत्यारों को फांसी की सजा मिले और किसी की भी बेटी के साथ ऐसा करने से पहले लोग हजार बार सोचें। उन्होंने कहा कि वह इस फैसले से संतुष्ट नहीं हैं लेकिन इससे उनकी बेटी की आत्मा को थोड़ी शांति तो जरूर मिली होगी। उन्होंने कहा कि उन्हें संतुष्टि तो तभी होगी जब उनके जीते जी उनकी बेटी के हत्यारों को फांसी की सजा मिलेगी। इतना कहते ही उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े।

सुबकते हुए उन्होंने कहा कि हत्यारों ने न केवल उनकी बेटी के साथ बुरा किया बल्कि उनकी जिंदगी भी नर्क बना दी। उन्होंने कहा कि एक बेटी को खोने का दुख एक मां ही समझ सकती है। उन्होंने समर्थन के लिए लोगों का भी आभार व्यक्त किया और कहा कि उनकी वजह से आज पहली जीत मिली है । यह पूछे जाने पर कि क्या वह हत्यारों को फांसी दिए जाने की मांग को लेकर हाईकोर्ट जाएंगी तो उन्होंने कहा, क्यों नहीं।

वहीं अंकिता के पिता वीरेंद्र भंडारी ने कहा कि वह अपनी बेटी के हत्यारों के लिए मौत की सजा चाहते थे इसलिए वह इस फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती देंगे। वीरेंद्र भंडारी ने संवाददाताओं से कहा,हमारी मांग थी कि जिस तरह से उन्होंने हमारी बेटी की हत्या की, उनको भी मौत की सजा सुनाई जानी चाहिए थी। अंकिता के पिता ने कहा कि उनकी यह भी मांग थी कि यमकेश्वर की भाजपा विधायक रेणु बिष्ट द्वारा सबूत मिटाने के प्रयासों और वीआईपी व्यक्ति की भी जांच की जाए जिससे पता चल सके कि वे लोग इस मामले में किस तरह शामिल थे।

बता दें कि पौड़ी जिले के यमकेश्वर में स्थित वनंत्रा रिजॉर्ट में रिसेप्शनिस्ट के तौर पर कार्य करने वाली 19 वर्षीया अंकिता की 18 सितंबर 2022 को कथित तौर पर रिजॉर्ट संचालक पुलकित आर्य ने अपने दो कर्मचारियों-सौरभ भास्कर और अंकित गुप्ता के साथ मिलकर हत्या कर दी थी। अंकिता के साथ विवाद के बाद आर्य ने अपने कर्मचारियों भास्कर और गुप्ता के साथ मिलकर उसे ऋषिकेश की चीला नहर में धक्का दे दिया था जिससे उसकी मौत हो गयी थी। पुलकित आर्य बीजेपी के तत्कालीन नेता विनोद आर्य का बेटा है जिन्हें यह मामला सामने आते ही पार्टी ने बाहर का रास्ता दिखा दिया था।

प्रधानमंत्री 31 मई को 863.69 करोड़ के विकास कार्यों का भूमि पूजन करेंगे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 31 मई को जंबूरी मैदान भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में जल संसाधन विभाग के 863.69 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का वर्चुअल भूमि पूजन करेंगे। इनमें 778.91 करोड़ रुपए की लागत से शिप्रा नदी पर घाट निर्माण और 84.78 करोड़ रुपए की लागत से बैराज, स्टॉप डेम एवं वेंटेड कॉजवे निर्माण कार्य शामिल हैं। सिंहस्थ 2028 के अंतर्गत आने वाले श्रद्धालुओं को मोक्षदायनी शिप्रा नदी के निर्मल और अविरल जल में सुगमता से स्नान और सुविधा की दृष्टि से उज्जैन में विभिन्न विकास कार्य कराए जा रहे हैं । जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने बताया कि उज्जैन जिले में शिप्रा नदी पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये दोनों किनारों पर शनि मंदिर से नागदा बायपास तक लगभग 30 किलोमीटर घाट निर्माण कार्य कराया जाएगा जिसकी लागत 778.91 करोड़ रूपये होगी। कार्य दिसंबर 2027 तक पूर्ण किया जाना लक्षित है। इसी प्रकार शिप्रा नदी पर जल संसाधन विभाग द्वारा 09 बैराज का निर्माण (उज्जैन जिले में 01, इंदौर जिले में 01 एवं देवास जिले में 07 बैराज) एवं नगर निगम उज्जैन द्वारा कालियादेह स्टॉप डेम का मरम्मत कार्य कराया जाएगा। कान्ह नदी पर 11 बैराजों (उज्जैन जिले में 05 एवं इंदौर जिले में 06) का निर्माण कार्य होगा । इन कार्यों की कुल लागत 84.78 करोड़ रूपये होगी।

अचानक महाराजपुरा जोन पहुंचकर ऊर्जा मंत्री ने किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बुधवार की रात अचानक ग्वालियर महानगर के महाराजपुरा विद्युत जोन पहुंचकर विद्युत वितरण व्यवस्था की स्थिति का निरीक्षण करते हुए आवश्यक सुधार के निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य अभियंता श्री अमित श्रीवास्तव तथा अधीक्षण अभियंता श्री नितिन मांगलिक भी मौजूद थे। ऊर्जा मंत्री ने महाराजपुरा विद्युत जोन पहुंचकर सबसे पहले उपस्थिति रजिस्टर का निरीक्षण किया तथा ट्रिपिंग रजिस्टर को देखा। उन्होंने जोन कार्यालय परिसर में पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था के निर्देश दिए। श्री तोमर ने कार्यालय में उपभोक्ताओं द्वारा की गई शिकायतों को देखा तथा मोबाइल द्वारा उपभोक्ताओं से समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी ली। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने आदित्यपुरम क्षेत्र पहुंचकर यहां के विद्युत उपभोक्ताओं से उनके घरों पर बातचीत की। साथ ही आदित्यपुरम में विद्युत लाइनों के ढीले तारों को कसवाने, ट्रांसफॉर्मर के चारों ओर सुरक्षा प्रबंध के लिए जाली लगवाने के निर्देश दिए। उन्होंने यहां के उपभोक्ताओं से निर्बाध विद्युत आपूर्ति के सम्बन्ध में भी जानकारी ली ऊर्जा मंत्री श्री तोमर दूसरे दिन ग्वालियर महानगर में विद्युत व्यवस्था का जायजा लेने आदित्यपुरम, आस्था नगर, हुरावली जोन में औचक निरीक्षण करने पहुंचे। ऊर्जा मंत्री ने लोगों के द्वार-द्वार जाकर विद्युत व्यवस्था के बारे में बातचीत की। उन्होंने विधुत शिकायतकर्ताओं से फोन पर चर्चा की। ऊर्जा मंत्री ने ट्रांसफार्मर और तारों के दुरुस्तीकरण के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए।

प्रधानमंत्री लोकमाता देवी अहिल्याबाई महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन में करेंगे शिरकत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी शनिवार 31 मई को लोकमाता देवी अहिल्या बाई की 300 वी जयंती पर भोपाल में महिला सशक्तिकरण महासम्मेलन में शामिल होंगे। भोपाल के जम्बूरी मैदान में आयोजित महा सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री मोदी इंदौर मेट्रो तथा सतना एवं दतिया एयरपोर्ट का वर्चुअल लोकार्पण करेंगे। इसके अलावा प्रधानमंत्री क्षिप्रा नदी पर 778 करोड के घाट निर्माण कार्यों का वर्चुअल भूमिपूजन करेंगे।

प्रदेश में 83 हजार से अधिक बच्चों को मिला निःशुल्क प्रवेश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के राज्य शिक्षा केन्द्र में शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत आयोजित की गई ऑनलाईन लॉटरी में 83 हजार 483 बच्चों को उनकी पसंद के निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश प्राप्त हुआ है। इनमें से 72 हजार 812 बच्चे ऐसे हैं जिन्हें उनके द्वारा चयनित प्रथम वरीयता वाले स्कूलों में प्रवेश मिला है। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह ने आरटीई के तहत निजी विद्यालयों की प्रथम प्रवेशित कक्षा में वंचित समूह और कमजोर वर्ग के बच्चों के नि:शुल्क प्रवेश के लिये ऑनलाइन लॉटरी का बटन क्लिक किया। इस प्रक्रिया का सीधा प्रसारण राज्य शिक्षा केन्द्र के यूट्यूब चैनल पर किया गया। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह ने कहा कि देश भर में आरटीई के तहत ऑनलाइन लॉटरी सिस्टम अपनाने वाला अग्रणी राज्य मध्यप्रदेश है। इस पारदर्शी व्यवस्था से अभिभावकों को उनके क्षेत्र के स्कूल और उनमें उपलब्ध सीटों की जानकारी के साथ ही ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से उनके बच्चों को स्कूल में सीट आवंटित हो जाएगी। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र ने लॉटरी में चयनित बच्चों को उनकी पंसद का स्कूल आवंटित होने पर बधाई दी और उनके उज्जवल

भविष्य की कामना की। संचालक ने पारदर्शी ऑनलाइन व्यवस्था निर्मित करने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग और मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रानिक्स डेव्हलेपमेंट कॉरपोरेशन टीम की प्रशंसा भी की।

संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र ने बताया कि आरटीई के तहत निजी विद्यालयों में प्रवेश के लिए पारदर्शी और तकनीक आधारित व्यवस्था अपनाई गई है। इस वर्ष आरटीई के तहत लॉटरी के लिए दस्तावेज सत्यापन के उपरांत एक लाख 66 हज़ार 751 बच्चे पात्र हुए थे। जिनमें से 83 हजार 483 बच्चों को उनके द्वारा चयनित स्कूलों का आवंटन किया गया है। इनमें से 43 हजार 363 बालक एवं 40 हजार 120 बालिकाएं हैं। जिन्हे आज इस ऑनलाइन लॉटरी मे शामिल करते हुये रेंड़म पद्धति से स्कूल का आवंटन किया गया है। जिन बच्चों को स्कूल का आवंटन हो रहा है, उन्हें उनके पंजीकृत मोबाईल नंबर पर एसएमएस माध्यम से भी सूचना दी जा रही है। बच्चे उनके आवंटित स्कूलों में 2 से 10 जून 2025 तक जाकर प्रवेश ले सकेंगे। इन बच्चों की फीस राज्य सरकार द्वारा नियमानुसार सीधे स्कूल के खाते में ऑनलाइन ट्रांसफर की जाएगी। ऑनलाईन लॉटरी में विभिन्न प्रायवेट स्कूलों की नर्सरी कक्षा में 54 हजार 038, केजी-1 में 22 हज़ार 799 और कक्षा पहली में 6 हज़ार 646 बच्चों को निःशुल्क प्रवेश के लिये सीटों का आवंटन हुआ है। ऑनलाइन लॉटरी में इनमें से 72 हजार 812 बच्चों को उनकी प्रथम वरीयता (फर्स्ट चॉइस) के स्कूलों का, 5 हजार 646 को द्वितीय वरीयता के स्कूलों का, 2 हजार 665 को तृतीय वरीयता के स्कूलों का, 924 को चतुर्थ वरीयता के स्कूलों का, 555 को पांचवीं वरीयता के स्कूलों का, 298 को छटवीं वरीयता के स्कूलों का, 235 को सातवीं वरीयता के स्कूलों का, 157 को आठवीं वरीयता के स्कूलों का, 90 को नवीं वरीयता के स्कूलों का तथा 101 को उनकी दसवीं वरीयता के स्कूलों का आवंटन हुआ है। यूट्यूब लाइव सत्र के दौरान संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह ने निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश हेतु पात्र विभिन्न श्रेणियों की बच्चों की जानकारी देते हुए बताया कि सबसे अधिक संख्या में विभिन्न श्रेणियों के गरीबी रेखा से नीचे वाले परिवारों के लगभग एक लाख 12 हजार से अधिक बच्चों के आवेदन लॉटरी प्रक्रिया के लिये पात्र हुए हैं।

मुरैना जिले की बेटी हिमानी तोमर ने लेफ्टिनेंट बनकर प्रदेश को किया गौरवान्वित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। देश व प्रदेश की बेटियाँ एवं महिलायें हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व क़ायम कर रही है। वीरभूमि के नाम से प्रसिद्ध मुरैना में सेना के क्षेत्र में अब तक बेटों का ही नाम सामने आ रहा था, लेकिन अब यहां की बेटियां भी सैन्य क्षेत्र में अपना योगदान दे रहीं हैं। हाल ही में अम्बाह के चांद का पुरा गांव की बेटी हिमानी ने सेना के पूना मेडिकल कॉलेज से नर्सिंग में स्नातक पाठ्यक्रम सफलता पूर्वक उत्तीर्ण कर सेना में कमीशन्ड नर्सिंग आफीसर लेफ्टिनेंट का पद प्राप्त किया है।

लेफ्टिनेंट बनकर हिमानी ने न केवल अपने परिवार को बल्कि प्रदेश एवं चम्बल अंचल को भी गौरवान्वित

किया है।हिमानी चांद का पुरा गांव के रिटायर्ड सूबेदार माधौ सिंह तोमर एवं श्रीमती सुमन तोमर की पुत्री, नायक विकास तोमर की बहन है। हिमानी को यह उपलब्धि पूना के कैप्टन देवाशीष कीर्ति चक्र परेड ग्राउंड में आयोजित कमीशनिंग सेरेमनी परेड मैदान में हासिल हुई है। हिमानी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा शांति निकेतन अंबाह से एवं 12 वी जवाहर नवोदय विद्यालय जौरा से प्राप्त की उसके कोटा एवं ग्वालियर से आगे की परीक्षायों की तैयारी की।

महिलाओं के हर क्षेत्र में सशक्त बनने से एक मजबूत राष्ट्र एवं समाज का निर्माण हो रहा है, जिसमें मध्यप्रदेश एवं मुरैना की महिलाएँ अपना योगदान बखूबी दे रही है।

लोक संगीत के क्षेत्र मे राष्ट्रीय लोक गायिका मान्या पाण्डेय का विशेष योगदान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सुश्री मान्या ने बढ़ाया प्रदेश का गौरव सीधी जिले की राष्ट्रीय लोक गायिका एवं देश की सबसे छोटी लोक गायिका मान्या पाण्डेय का विंध्य क्षेत्र के लोक संगीत को आगे बढ़ाने एवं संरक्षित करने में विशेष योगदान रहा है। सुश्री मान्या पाण्डेय विंध्य क्षेत्र की एक मात्र ऐसी लोक गायिका हैं जो बहुत कम उम्र में देश भर में बघेली लोकगीतों को पहुंचा रही है। लोक गायिका सुश्री मान्या पाण्डेय 5 वर्ष की छोटी उम्र से मंचीय प्रस्तुति दे रही है। अब तक देश के विभिन्न प्रदेशों लगभग 422 मंचों में प्रस्तुति दे चुकी हैं। इसके साथ ही देश के विभिन्न राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक न्यूज चैनल्स में अपने लोकगीतों की प्रस्तुति दे चुकी

हैं। बघेली लोकगीतों के साथ-साथ बुंदेली, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का अनुभव भी है। मान्या सीधी पर्यटन, सीधी पुलिस, नेशनल आर्टिस्ट यूनियन बिहार, झारखंड, उत्थान सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति सीधी-रीवा (म.प्र.) की ब्रांड एम्बेसडर भी रही हैं। कांसेप्ट कम्यूनिकेशन कंपनी मुंबई द्वारा मध्यप्रदेश माध्यम, म.प्र. शासन का उपक्रम के द्वारा इन्फ्लुएन्सर नियुक्त किया गया है। आपके द्वारा भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय नई दिल्ली, मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग भोपाल, स्वराज संस्था भोपाल, जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी भोपाल, मध्यप्रदेश जनसंपर्क सहभागिता के माध्यम से शासकीय योजनाओं के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस 31 मई को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।तंबाकू एक धीमा जहर है, इससे बचाव ही समझदारी थीम पर 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा प्रदेश के समस्त जिलों में तंबाकू व नशा विरोधी गतिविधियाँ पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएगे।जिनमें छात्रों, युवाओं, स्वयंसेवी संगठनों तथा विभिन्न विभागों की सक्रिय भागीदारी रहेगी। प्रमुख सचिव सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण श्रीमती सोनाली वायंणकर ने बताया कि इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन की थीम पर आधारित कार्यक्रमों की श्रृंखला में प्रत्येक जिले में प्रभातफेरी, मैराथन, रंगोली, नुक्कड़ नाटक और गीत-संगीत के माध्यम से समाज को तंबाकू के दुष्परिणामों से अवगत कराया जाएगा। भोपाल में आयोजित मुख्य समारोह में स्कूली बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रमों के माध्यम से कैंसर, टीबी और हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारियों से बचाव का संदेश देंगे। साथ ही, तंबाकू सेवन के दुष्प्रभावों पर आधारित वॉल पेंटिंग और पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई जायेगी। शहर के प्रमुख चौराहों और सार्वजनिक स्थलों पर बैनर और होर्डिंग्स के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश, राष्ट्रीय नशामुक्ति हेल्पलाइन नंबर 14446 का भी प्रचार किया जा रहा है। इससे नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों को उचित मार्गदर्शन मिल सके। प्रमुख सचिव श्रीमती वायंणकर ने बताया कि विशेष रूप से विद्यालयों और महाविद्यालयों के 100 मीटर के दायरे में पान-गुटका की दुकानों पर विक्रय पर प्रतिबंध की कार्रवाई जिला प्रशासन द्वारा की जाएगी। साथ ही, ग्रीष्मकालीन शिविरों में आयोजित चित्रकला, निबंध लेखन और भाषण प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों में विषय के प्रति गहरी समझ विकसित करने के प्रयास किए जा रहे है। राज्य भर में आयोजित इन गतिविधियों की प्रविष्टियाँ भारत सरकार द्वारा विकसित ह्स्क्रमोबाइल ऐप/वेबलिंक पर अपलोड की जायेगी।

एम पी ट्रांस्को के प्रशिक्षण वेबिनार श्रृंखला का शतक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कोविड महामारी के दौरान आरंभ हुई वेबिनार की एक पहल ने मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांस्को) के वर्क कल्चर को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे कार्मिकों की कार्य दक्षता में गुणात्मक परिवर्तन के साथ आत्मविश्वास में भी उल्लेखनीय सुधार आया है। अब 100 साप्ताहिक वेबिनार की श्रृंखला का यह चरण सफलतापूर्वक समाप्त हो चुका है। प्रारंभ में संकट के समाधान के रूप में शुरू की गई यह पहल, डिजिटल परिवर्तन और नवाचार की मिसाल बन गई।

वेबिनार की इस श्रृंखला के दौरान, पूरे मध्यप्रदेश से 500 से अधिक कनिष्ठ फील्ड युवा अभियंताओं और तकनीकी कर्मियों ने नियमित रूप से भाग लिया। प्रत्येक सप्ताह आयोजित होने वाले इन सत्रों में बिजली क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रही तकनीकों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर चर्चा की गई। अधीक्षण अभियंता श्री सुनील यादव ने कहा कि यह वेबिनार केवल ज्ञान साझा करने का माध्यम नहीं रहे, बल्कि इन्होंने हमारी टीमों को सशक्त, आत्मविश्वासी और फील्ड में सटीक कार्य करने में अधिक प्रभावी बनाया। इस वेबिनार श्रृंखला की एक प्रमुख उपलब्धि वरिष्ठ और कनिष्ठ अभियंताओं के बीच बेहतर समन्वय रहा।

प्रदेश में पेयजल स्रोतों के साथ-साथ नहरों की सफाई कार्य को भी प्राथमिकता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान 30 मार्च से निरंतर जारी है। जिलों में पेयजल स्रोतों की साफ-सफाई के साथ-साथ नहरों की सफाई के कार्य को भी प्राथमिकता दी जा रही है। माँ नर्मदा के किनारे लगे गाँवों में जन-अभियान परिषद जन-प्रतिनिधियों के नेतृत्व में जल यात्रा का आयोजन कर रही है। यात्रा में ग्रामीणजन बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्पों को साकार करने के लिये शहडोल जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान में 30 मार्च से गतिविधियाँ निरंतर जारी हैं। जिले में नये तालाब बनाये जा रहे हैं, वहीं दूसरी

ओर पुराने तालाबों, बावड़ियों और कुओं का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जनपद पंचायत बुढ़ार की ग्राम पंचायत मजौरा में नवीन खेत-तालाब का कार्य किया गया। जिले में प्राचीन बावड़ियों के सुधार की पहल भी की गयी है। पानी की बचत के महत्व को समझाने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा रचनात्मक गतिविधियाँ की जा रही हैं।

मुरैना जिले में नहर, नदियों और तालाबों के आसपास सफाई का कार्य किया जा रहा है। अम्बाह शाखा नहर की वितरिका पर पुलिया के अपस्ट्रीम और डाउन स्ट्रीम में जंगल सफाई एवं मिट्टी हटाने का कार्य जन-भागीदारी से किया गया। विभागीय मैदानी कर्मचारियों ने भी श्रमदान किया। जिले में जन-अभियान परिषद के सदस्य नुक्कड़ नाटक एवं गीत के माध्यम से जन-सामान्य को जल के महत्व के बारे में जानकारी दे रहे हैं। जिले में इस अभियान को जन-आंदोलन का रूप दिया गया है। नागरिकों को घर में लगे नल से पानी के अपव्यय को रोकने और जल-स्रोतों के आसपास सफाई के महत्व के बारे में निरंतर जानकारी दी जा रही है।

सीहोर जिले की सीमा मेवाड़ा अब दे रही है दूसरों को रोजगार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मजबूत इरादा हो और कुछ करने की प्रबल इच्छा शक्ति हो, तो मुश्किल राह भी आसान हो जाती है। इसे सीहोर जिले की श्रीमती सीमा मेवाड़ा ने साबित कर दिखाया है। छोटे-से गाँव रामखेड़ी में रहने वाली सीमा कभी खुद सिर्फ एक ग्रहणी थी। दिनभर घर के कामकाज में व्यस्त रहना, परिवार की जिम्मेदारी निभाना, यही इनकी रोजमर्रा की जिंदगी थी। लेकिन कहीं न कहीं उनके मन में कुछ अपना करने का, अपनी पहचान बनाने का जज्बा था। उनके मन में आगे बढ़कर अपने जैसे लोगों को आगे बढ़ाने का एक सपना था। महिलाओं के लिये प्रेरणा बन रही सीहोर जिले के ग्राम रामखेड़ी निवासी श्रीमती मेवाड़ा उन महिलाओं में से एक है, जो वास्तव में कुछ कर दिखाने का हुनर रखती हैं।

श्रीमती मेवाड़ा ने बताया कि मेरा शुरू से यही प्रयास था कि मैं स्वयं का व्यवसाय शुरू करूँ, लेकिन आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने से अपने कदम पीछे हटा लेती थीं। श्रीमती मेवाड़ा ने बताया कि मुझे

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण योजना की जानकारी मिली, तो मैंने इसके लिये आवेदन किया। कुछ ही दिनों में मुझे इस योजना के अंतर्गत 3 लाख 40 हजार रुपये का ऋण मिल गया। ऋण मिलने के बाद मैंने अपने परिवार की सहायता से शुरू में छोटे स्तर से अपना नमकीन बनाने का कार्य प्रारंभ कर नमकीन बनाने की एक छोटी-सी यूनिट शुरू की। धीरे-धीरे हमारे द्वारा बनाया जाने वाला नमकीन लोगों को पसंद आने लगा और मेरा व्यवसाय आगे बढ़ने लगा।श्रीमती मेवाड़ा ने बताया कि शुरूआत में काम मुश्किल था। सीमित संसाधन, कम अनुभव, लेकिन हौसला बुलंद था। परिवार ने भी मेरा पूरा साथ दिया। धीरे-धीरे मेरी मेहनत रंग लाने लगी। मेरा नमकीन का व्यवसाय छोटी दुकानों से बढ़कर थोक नमकीन सप्लाई होने लगी। आज सीमा के वर्कशॉप में मशीनों से नमकीन बनता है और खास बात यह है कि इस काम में 9 लोगों को रोजगार मिल रहा है। जो महिला कभी घर से बाहर निकलने में हिचकती थी, वह आज दूसरों के सपनों को भी पँख दे रही है। सीमा की मासिक आय 20 हजार रुपये तक पहुँच चुकी है और काम लगातार बढ़ रहा है।

सीमा कहती हैं कि अगर महिला काम करने की ठान ले तो कुछ भी असंभव नहीं है। हम सिर्फ घर सम्हालने तक सीमित नहीं, बल्कि देश की अर्थ-व्यवस्था सम्हालने में भी पीछे नहीं हैं। श्रीमती मेवाड़ा आज अपने गाँव की ही नहीं, पूरे जिले की प्रेरणा बन चुकी है।

ऊर्जा मंत्री तोमर ने किया सिविल अस्पताल हजीरा का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शुक्रवार को उप नगर ग्वालियर के सिविल अस्पताल हजीरा का निरीक्षण कर रोगियों को परोसे जा रहे भोजन की गुणवत्ता को परखा। ऊर्जा मंत्री सुबह-सुबह सिविल अस्पताल हजीरा पहुंचे तथा यहां आने वाले रोगियों को दी जा रहीं स्वास्थ्य सेवाओं के सम्बन्ध में जानकारी ली। उन्होंने अस्पताल के किचन का भी निरीक्षण किया तथा रोगियों को दिए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता को परखने के लिए स्वयं भोजन का स्वाद लिया।

इस दौरान ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने सिविल अस्पताल हजीरा की साफ-सफाई का निरीक्षण भी किया तथा अस्पताल अधीक्षक डॉ. प्रशांत नायक, डॉ. जेपीएस कुशवाह सहित अन्य चिकित्सीय अधिकारियों से चर्चा कर

अस्पताल में आवश्यक मशीनों और संसाधनों की कमी को शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि स्वस्थ समाज ही सशक्त राष्ट्र की नींव है। जनता को उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

पश्चिम मप्र में अब तक 12.10 लाख स्मार्ट मीटर स्थापित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं की सुविधा एवं पारदर्शिता के मद्देनजर स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं। अब तक मालवा-निमाड़ में 12 लाख 10 हजार स्मार्ट मीटर स्थापित हो चुके हैं। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि स्मार्ट मीटरों से उपभोक्ताओं को कई तरह की सुविधाएं मिल रही हैं। पॉवर फैक्टर छूट एवं टाइम ऑफ द डे (टीओडी) छूट संबंधी गणना के लिए लिए भी ये मीटर उपयोगी साबित हो रहे हैं। मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के प्रबंध निदेशक श्री अनूप कुमार सिंह ने बताया कि स्मार्ट मीटरों का शहरी क्षेत्रों में तेजी से स्थापना जारी हैं। वर्तमान में कंपनी क्षेत्र के सभी जिलों में कुल 12 लाख 10 हजार स्मार्ट मीटर स्थापित हो चुके हैं। महू, झाबुआ, खरगोन, थांदला नगरीय निकाय शत प्रतिशत स्मार्ट मीटर स्मार्ट मीटर वाले घोषित हो चुके हैं। वहीं संख्या के आधार पर सबसे ज्यादा लाख, उज्जैन जिले में 1.22 लाख, रतलाम जिले में 1.13 लाख, देवास जिले में 62 हजार, इंदौर ग्रामीण वृत्त के अधीन नगरीय निकायों में 59 हजार, खंडवा जिले में 58 हजार, खरगोन जिले में 50 हजार उपभोक्ताओं के यहां स्मार्ट मीटर लग चुके हैं।

स्वरोजगार स्थापित कर महिला उद्यमी दे रही अब दूसरों को रोजगार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। श्रीमती नीतू सिंह अपने पति के साथ पेपर दोना पत्तल निर्माण की इकाई स्थापित करना चाहती थी। उनके द्वारा जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र में संपर्क किया गया जहां विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं के बारे में उन्हें जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना अंतर्गत यूनियन बैंक ऑफइंडिया डी पी कॉम्प्लेक्स सीधी के माध्यम से पेपर दोना पत्तल इकाई स्थापित करने हेतु 10 लाख रु का ऋण प्राप्त कर अपनी इकाई कात्यायनी उद्योग स्थापित की।

आज यह इकाई न केवल 5 से 6 लोगों को रोजगार प्रदान कर रही है बल्कि इकाई से प्रतिमाह 35 से 40 हजार रुपए का लाभ भी प्राप्त हो रहा है। वहीं योजनान्तर्गत शासन से 247500 रु की सब्सिडी भी प्राप्त हुई है जो स्वरोजगार संचालन के लिए मददगार साबित हो रही है। श्रीमती नीतू सिंह बताती है कि आज उनकी इकाई से निर्मित दोना पत्तल न केवल सीधी अपितु इलाहाबाद और कानपुर तक भी भेजे जाते हैं।

जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु मुख्यमंत्री की अभिनव पहल

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जल से ही जीवन का आरम्भ हुआ। जल ही जीवन का आधार है। मानव शरीर का 70 प्रतिशत भाग जल से निर्मित है। पीने के अलावा भी कई उद्देश्यों के लिए दैनिक जीवन में जल का उपयोग किया जाता है। दुनिया में सभी जीवों लिए जल की आवश्यकता होती है। जल हमारे जीवन के लिए अभिन्न और महत्वपूर्ण है। यह हमारे शरीर के ऊर्जा स्रोत, स्वास्थ्य और संतुलित विकास का मूल आधार है। जल के बिना हम न तो जीवित रह सकते हैं और न ही कोई जीवनरूपी रचना अस्तित्व में आ सकती है। इसके साथ ही जल हमें स्वच्छता, संपन्नता और समृद्धि की ओर ले जाता है। यह समुद्रों, नदियों, झीलों और तालाबों के रूप में प्रकृति में विद्यमान है और हमें इसे बचाएं और संरक्षित रखने की जरूरत है । जल संरक्षण के माध्यम से हम स्वच्छ और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं और आने वाले पीढ़ियों को भी संतुष्टि और सुरक्षा दे सकते हैं।

इसी उद्देश्य से मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार पूरे प्रदेश में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। जिसके परिपेक्ष्य में सीधी जिले में कलेक्टर श्री स्वरोचिष सोमवंशी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अंशुमन राज के निर्देश के परिपालन में जिले की जनपद पंचायत कुसमी की ग्राम पंचायत रौहाल, जनपद पंचायत मझौली की ग्राम पंचायत मड़वास, जनपद पंचायत रामपुर नैकिन की ग्राम पंचायत पोड़ी तथा अकौरी,जनपद पंचायत सीधी की ग्राम पंचायत महाराजपुर तथा पड़रिया कला एवं जनपद पंचायत सिहावल की ग्राम पंचायत राजगढ़ तथा सहजी में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंर्तगत जल संरक्षण एवं जल संवर्धन के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

जिले में संचालित मदिरा दुकानों में रेट लिस्ट लगाने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशन में एवं संतोष सिंह कुशवाह जिला आबकारी अधिकारी सीधी के मार्गदर्शन में जिले में संचालित कम्पोजिट मदिरा दुकानों के पास साफ सफाई एवं अवैध मदिरा विनिर्माण, विक्रय, परिवहन के विरूद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

आबकारी उपनिरीक्षक अंजली मिश्रा एवं मणिराज मिश्रा द्वारा जिले में संचालित कम्पोजिट मदिरा दुकानों का निरीक्षण किये गये, निरीक्षण के दौरान दुकानों के पास साफसफाई एवं रेट लिस्ट चस्पा करने के निर्देश दिये गये। जिले में मुखविरों से प्राप्त सूचना के आधार पर सीधी जिले के विभिन्न स्थानों पर छापामार कार्यवाही कर कुल 33 न्यायालयीन प्रकरण कायम किये गये, जिसमें लगभग 300 किलो ग्राम महुआ लाहन एवं 62.7 बल्क लीटर मदिरा जप्त की गई।

उक्त प्रकरण मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34 (1) (क) एवं (च) के तहत पंजीबद्ध किये गये है। सहयोगी दल में आबकारी मुख्य आरक्षक श्याम बहादुर सिंह आबकारी आरक्षक गौरव उपाध्याय, सुधीर सिंह, संजय भारती, कमल नारायण मौर्य, राहुल बंसल, एवं पुनीत कुशवाहा का विशेष योगदान रहा।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत मिट्टी परीक्षण पर वैज्ञानिकों का जोर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास ने जानकारी देकर बताया है कि दिनांक 29 मई 2025 से 12 जून 2025 तक के बीच आयोजित होने वाले विकसित कृषि संकल्प का आज दूसरा दिन है, जिसके अन्तर्गत सीधी जिले में भी गठित तीनों दलो द्वारा अभियान का संचालन किया गया सीधी विकासखण्ड में पहले दल द्वारा बढ़ौरा, कुबरी, सेमरिया दूसरे दल द्वारा कोठार, उपनी, शिवपुरवा नं. 01 तीसरे दल द्वारा कुसमी विकासखण्ड की टमसार, ठाड़ीपाथर एवं दुआरी में अभियान का संचालन किया गया।

कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से आग्रह किया है कि वे अपने खेतों की मिट्टी का परीक्षण अवश्य करवाएं, क्योंकि यह फसल उत्पादन बढ़ाने और मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिट्टी परीक्षण से मिट्टी में मौजूद पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा का पता चलता है, जिससे किसान उर्वरकों का संतुलित उपयोग कर सकते हैं। इससे न केवल फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि अनावश्यक उर्वरक उपयोग से होने वाली लागत में कमी और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलती है।

कृषि वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि किसान अपने खेतों से मिट्टी के नमूने सही तरीके से एकत्र करें। इसके लिए खेत के 8-10 विभिन्न स्थानों से 15 सेंटीमीटर गहराई तक मिट्टी लेकर, उसे मिलाकर लगभग 500 ग्राम का नमूना तैयार करना चाहिए। नमूना लेते समय खाद के ढेर, पेड़ों की छाया या जलभराव वाले क्षेत्रों से बचना चाहिए। यह नमूना स्थानीय कृषि विस्तार अधिकारी या नजदीकी मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में जमा करवाया जा सकता है।

किसानों को सलाह दी गई है कि वे स्थानीय कृषि विस्तार अधिकारियों से संपर्क करें, जो मिट्टी के नमूने एकत्र करने और परीक्षण प्रक्रिया में सहायता प्रदान कर सकते हैं। वैज्ञानिकों ने जोर देकर कहा कि समय पर मिट्टी परीक्षण और उसकी रिपोर्ट के आधार पर उर्वरकों का उपयोग किसानों की आय बढ़ाने और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कृषि विभाग और वैज्ञानिकों ने किसानों से अपील की है कि वे इस सुविधा का लाभ उठाएं और अपने खेतों की मिट्टी का परीक्षण नियमित रूप से, विशेष रूप से बुवाई से एक माह पहले, करवाएं। अधिक जानकारी के लिए किसान अपने नजदीकी कृषि विभाग कार्यालय या मृदा परीक्षण प्रयोगशाला से संपर्क कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि विकसित कृषि संकल्प अभियान के अन्तर्गत शनिवार को पहले दल द्वारा रामपुर नैकिन वि.ख. के पोड़ी, नौगवां, हनुमानगढ़, दूसरे दल द्वारा सिहावल वि.ख. के हटवाखास, हटवादेवार्थ, घोघरा तथा तीसरे दल द्वारा कुसमी वि.ख. के कुसमी, मगवार एवं कोड़ार में अभियान का संचालन किया जायेगा।

भारतीय जनता पार्टी अटल नगर मंडल ने निकाली भव्य तिरंगा यात्रा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होल्कर जी का 300वां जयंती की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी अटल नगर मंडल रीवा के तत्वाधान के सभी शक्ति केन्द्रों में तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। सभी वार्डो की तिरंगा यात्रा का एकत्रीकरण जय स्तम्भ चौक में हुआ, जहां पर भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता एवं मंडल अध्यक्ष गौरव पाण्डेय के नेतृत्व में भारत माता की जय एवं वन्देमातरम के नारों के साथ तिरंगा यात्रा जय स्तम्भ चौक से भाजपा कार्यालय अटल कुंज के लिए रवाना हुई।

भाजपा कार्यालय अटल कुंज में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की पुष्पांजली आर्पित कर यात्रा समापन हुआ। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष उमाशंकर पटेल, जिला उपाध्यक्ष महिला मोर्चा श्रीमती साधना गुप्ता, पूर्व मंडल अध्यक्ष शेखर सचेदवा, वार्ड पार्षद समीर शुक्ला, राजीव शर्मा, यात्रा के संयोजक श्री कृष्ण गुप्ता, सह संयोजक संतोष मिश्रा, दिलीप तिवारी, जीवनलाल साकेत, प्रभात दीक्षित, डॉ. मुजीब खान, रामसखा वर्मा, रमेश राठौर, रमेश कुशवाहा, अमित द्विवेदी, भानू मिश्रा, पूनम मिश्रा, बालेन्द्र गौतम, अखिलेश शुक्ला, मनीषा सिंह, शांति रजक, तरूणा वर्मा, पवन तिवारी, अजय प्रधान, राजेश साहू शिवाकर कुशवाहा, सपना वर्मा, रीतेश द्विवेदी, अनिल शुक्ला पप्पू, रीना सिंह, ज्योति सोंधिया, आलोक तिवारी, मो. इमरान गुलाब, शशि मिश्रा, विनोद उपाध्याय जयशरण पाण्डेय, रामदरश गौतम अशोक वर्मा, रीता निषाद, मंडल के पदाधिकारी, वार्डो के संयोजक, सह संयोजक, त्रिदेव आदि सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आधार मशीनों के संचालन के लिए ऑपरेटर्स की आवश्यकता

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास ने जानकारी देकर बताया है कि महिला एवं बाल विकास विभाग सीधी के अंतर्गत संचालित 07 बाल विकास परियोजनाओं में संचालनालय, महिला एवं बाल विकास म.प्र. के पत्र दिनांक 20.05.2025 से रजिस्ट्रार म.बा.वि. (कोड-852) की आधार पंजीयन मशीनों के संचालन के संबंध में निर्देश प्राप्त हुये है।

जिला कलेक्टर के माध्यम से रजिस्ट्रार महिला एवं बाल विकास के आधीन बाल विकास परियोजनाओं में स्थित आधार मशीनों के संचालन हेतु ऑपरेटर्स की आवश्यकता है। उन्होने बताया कि जिला कलेक्टर द्वारा स्थानीय स्तर पर ऑपरेटर्स का चयन किया जायेगा, ऑपरेटर्स की योग्यता कक्षा 12वीं उत्तीर्ण, एनएसईआईटी द्वारा आयोजित आधार पंजीयन परीक्षा उत्तीर्ण, संबंधित जिले का निवासीहो, ऑपरेटर यूआईडीएआई द्वारा ब्लैक लिस्टेड/संस्पेंडेड न हो, आधार कार्य अनुभव को प्राथमिकता, एक समान योग्यता होने पर एक से अधिक आवेदक होने पर अधिक अनुभव होने वाले आवेदक को प्राथमिकता, आवेदक पर कोई आपराधिक प्रकरण पंजीबद्ध न हो। संबंधित आवेदक जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग सीधी के कार्यालय में दिनांक 05 जून 2025 तक कार्यालयीन दिवसों एवं समय में अपना आवेदन प्रस्तुत कर सकता है।

आपदा प्रबंधन की तैयारी बैठक 2 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में 2 जून को आपदा प्रबंधन की तैयारी बैठक आयोजित की गई है। बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल बाढ़ नियंत्रण एवं आपदा प्रबंधन की तैयारियों की विभागवार समीक्षा करेंगी। बैठक साप्ताहिक टीएल बैठक के बाद आरंभ होगी। सभी संबंधित अधिकारियों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

वर्षा से पूर्व सड़कों का सुधार कार्य पूरा करायें - कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वर्षा से पूर्व सभी सड़कों का सुधार कार्य करायें तथा जहां पैच वर्क कराया जाना है वहाँ तत्काल कार्य प्रारंभ करायें।

कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने परफारमेंस ग्रांट के तहत कार्यों की स्थिति की जानकारी प्राप्त की तथा कार्य न प्रारंभ होने पर संविदाकार एवं संबंधित एसडीओ को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने मनगवां से चाकघाट मार्ग में निर्माण एजेंसी द्वारा व्यवस्थित ढंग से पैच कार्य न करने पर नोटिस देने के निर्देश एमपीआरडीसी के अधिकारी को दिये। कलेक्टर ने पीएम जीएस वाय की सड़कों सहित रीवा नगर निगम क्षेत्र में सड़कों के सुधार कार्य 20 जून तक पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सभी नालों, पुलियों की सफाई करायें ताकि वर्षाकाल में निर्बाध पानी की निकासी हो सके। जल भराव न हो। कलेक्टर ने लोकनिर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि वर्षाकाल से पहले डूबने वाले पुल-पुलियों की पहचान कर चेतावनी के बोर्ड लगवाएं तथा निर्माण कार्यों को इस स्तर तक पूर्ण करें ताकि वर्षा के कारण व्यवधान न आने पाए। उन्होंने कहा कि अनुबंध की समय सीमा में कार्य को पूर्ण कराने के लिए कार्यपालन यंत्री अपने स्तर पर संबंधित निर्माण एजेंसी व अधीनस्थ अधिकारियों की समीक्षा करें। इस अवसर पर आयुक्त नगर निगम डॉ. सौरभ सोनवणे, सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर तथा निर्माण विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला खनिज प्रतिष्ठान न्यास समिति की बैठक 3 जून को

रीवा. कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन की अध्यक्षता में जिला खनिज प्रतिष्ठान न्यास समिति की बैठक आगामी 3 जून को कलेक्ट्रेट सभागार मऊगंज में शाम 4 बजे से आयोजित की गई है। संबंधित अधिकारियों को जनपद पंचायत अन्तर्गत जिला खनिज प्रतिष्ठान न्यास मद से ग्राम पंचायतों में स्वीकृत व पूर्ण कार्यों की अद्यतन जानकारी के साथ उपस्थिति के निर्देश दिये गये हैं।

प्रेरणा ने जन्मदिन पर रक्तदान कर दिया मानवता का संदेश

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। अपने जन्मदिन पर मानव सेवार्थ शहर के अनेक रक्तवीर रक्तदान कर न केवल अपना जन्मदिन मनाते हैं बल्कि साथ साथ दूसरों के जीवन मे भी खुशियाँ बिखेरने मे पीछे नहीं रहते । इन्ही मे से एक है श्रीमती प्रेरणा जादवानी जी जो अपनी बेटी के जन्मदिन के साथ-साथ अपना जन्मदिन भी रक्तदान कर मनाती हैं प्रेरणा ने 29 मई गुरुवार को अपना 40 वा जन्मदिन रक्तदान कर मनाते हुए मानवता का संदेश दिया।

सिन्धू विकास समिति के अध्यक्ष एवं रक्तदाताओं को प्रेरित करने वाले विनोद गेलानी ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर अमित जादवानी, राखी होतचंदानी,मोना चोपड़ा, सुनीता सचदेवा, प्रयांश सचदेवा, मनीष सदानी, बंसी नागदेव, सागर जसवानी, आकाश बनर्जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे ।

उल्लेखनीय है कि समिति के कुशल मार्गदर्शन में पिछले कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान की अलख ज्योति जलाकर इंसानियत का धर्म निभाते हुए मानवता की सेवा की जा रही है एवं अभी तक 6614 यूनिट रक्तदान एवं 36 यूनिट प्लेटलेट्स करवाने का एक रिकॉर्ड भी कायम किया है। श्रीमती जादवानी जी के रक्तदान करने पर संस्था के संरक्षक श्री गोपी गेलानी श्रीचंद मनवानी मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी ज्ञान खटवानी इंद्रलाल आडवानी बंसी नागदेव महिला मंडल से मोना चोपड़ा राखी होतचंदानी डॉ मनीषा सोई डॉक्टर विद्या पांडे,कशिश नागदेव सिमरन होतचंदानी निशा गोयल आभा सिंह रशिम जैन अनामिका सोनी कशिश नागदेव ने प्रेरणा जी को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है

तीन दिवसीय हज़रत मिस्कीन शाह का 90वां सालाना उर्स सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हज़रत मिस्कीन शाह रहमतुल्लाह अलैह का तीन दिवसीय सालाना 90वां उर्स बड़े ही धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। उर्स के आयोजन मे सुबह गुस्ल फातीहा खानी व परचम कुसाई के बाद उर्स का आगाज हुआ व रात्रि को आस्ताने मे सूफियाना कव्वाली का शनदार आयोजन हुआ।

राजू मुरली व उनकी टीम द्वारा शानदार प्रस्तुती दी 28 तारीख को हर धर्म व मजहब के लोगो द्वारा चादर पोशी व फातीहा ख्वानी की गई। कार्यक्रम के तीसरे दिन मुख्य प्रोग्राम मे मध्य प्रदेश शासन के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल जी मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित होना था लेकिन उन्हे एक आवश्यक कार्य दिल्ली जाना था, इसलिये उन्होने दोपहर मे ही दरगाह शरीफ पंहुच कर चादर पोशी की, जिसके बाद हाफिज गुले हयात खान ने देश की खुशहाली व अमनो अमान की दुआ मांगी।

चादर पोशी कार्यक्रम मे भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता, वरिष्ठ समाज सेवी परमजीत सिंह डंग, राजगोपाल चारी, वरिष्ठ समान सेवी देवेन्द्र दुबे, उर्ष कमेटी अध्यक्ष अब्दुल वारिस रज्जन, पार्षद संजय खान व कमेटी के पदाधिकारी अनवर, शेखू, आफताब आलम एड0, प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

रात्रि कव्वाली के आयोजन मे आमिल आरिफ साबरी दिल्ली व अली जावेद वारसी हैदराबाद के बीच जबरजस्त मुकाबला दुखने को मिला, दोनों कव्वालों ने शानदार नातिया कलाम पेश किया। उर्स मे मैहर, कटनी, व आसपास के उर्स कमेटी के लोग व आम जन पहुचे, उर्स कमेटी के अध्यक्ष अब्दुल वारिस रज्जन ने पुलिस प्रशासन बिछिया थाना, सिटी कोतवाली व उर्स कमेटी के पदाधिकारियों को सहयोग व्यवस्था व कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आभार ज्ञापित किया है।

देवी अहिल्या बाई के जीवन दर्शन पर आयोजित हुई पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार विगत तीन दिन से संजय गांधी स्मृति शासकीय महाविद्यालय में देवी अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित विभिन्न गतिविधियां आयोजित हो रही हैं। शुक्रवार दिनांक 30 मई 2025 को देवी अहिल्याबाई के जीवन दर्शन पर आधारित पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी के सिंह ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं के माध्यम से हमारे अंदर की कला को उभर कर बाहर आने का अवसर प्राप्त होता है।

कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रोफेसर विनोद कुमार साकेत ने प्रतिभागियों को प्रतियोगिता से संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश दिए। आज के कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी के सिंह, डॉ अरविंद कुमार त्रिपाठी प्राध्यापक भौतिक शास्त्र, प्रो विनोद कुमार साकेत विभागाध्यक्ष हिंदी, डॉ नागेंद्र सिंह सहायक प्राध्यापक हिंदी, डॉ राकेश कुमार प्रजापति सहायक प्राध्यापक भूगोल डॉ आशुतोष पांडेय राजनीति विज्ञान, डॉ राजेश कुमार मिश्रा राजनीति विज्ञान तथा विभिन्न संकायों के पर्याप्त संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

न्यायालय के आदेश पर की गई कब्जा हटाने की कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। तहसीलदार गोपद बनास ने जानकारी देकर बताया कि ग्राम डैनिहा में न्यायालय चतुर्थ व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड सीधी के इजराय प्रकरण 69/2017 कृष्ण प्रताप सिंह विरुद्ध मोहन कोल वगैरह आदेश दिनांक 26.04.2025 एवं आदेश दिनांक 15.05.2025 के परिपालन में न्यायालय के कर्मचारी बेलिफ/तामील कुनिन्दा द्वारा पुलिस बल की सहायता से संबंधित आराजी से खपरैल कच्चे मकानों को हटवाया गया है। उक्त प्रकरण में रिक्त भूमि का आधिपत्य डिक्रीधारीगण को दिलवाए जाने हेतु समस्त कार्यवाही व्यवहार न्यायालय के आदेश पर न्यायालय द्वारा निर्धारित दिनांक एवं समय पर न्यायालय के कर्मचारियों द्वारा की गई है। तहसीलदार ने बताया कि उक्त मामला जिला प्रशासन के संज्ञान में आने पर कलेक्टर श्री स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशानुसार बेदखल परिवारों को नगर पालिका के सहयोग से रैन बसेरा में आश्रय और भोजन पानी की व्यवस्था कराई गई है। उनके पुनर्वास हेतु ग्राम सीधी खुर्द में शासकीय भूमि खसरा क्रमांक 148, 149 चिन्हित कर पात्रतानुसार पट्टे एवं नगरपालिका से प्रधानमंत्री आवास की कार्यवाही तत्परता से की जा रही है।

विचार

तंबाकू छोड़ने से बच सकती हैं लाखों जिंदगियां

हर साल 31 मई को वर्ल्ड नो टोबैको डे मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य लोगों को तंबाकू से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसके सेवन से रोकना है। भारत जैसे देश के लिए यह दिन इसलिए भी बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां तंबाकू का उत्पादन और सेवन दोनों ही बड़ी मात्रा में होता है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तंबाकू उत्पादक और उपभोक्ता देश है। आंकड़े बताते हैं कि तंबाकू के कारण हर साल लगभग 13.5 लाख लोगों की मौत होती है। यह एक ऐसा संकट है, जो लगातार बढ़ता जा रहा है और इससे निपटने के लिए सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर मजबूत प्रयासों की आवश्यकता है। तंबाकू का नुकसान केवल धूम्रपान तक सीमित नहीं है। भारत में बड़ी संख्या में लोग बिना धुएं वाले तंबाकू जैसे गुटखा, खैनी, जर्दा और पान मसाला का सेवन करते हैं। ये सभी उत्पाद शरीर को उतनी ही गंभीर हानि पहुंचाते हैं जितनी सिगरेट और बीड़ी। इसके साथ ही अब ई-सिगरेट्स का चलन भी बड़ी तेजी से बढ़ा है, जिन पर भारत में कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाया गया है। लेकिन इसके बावजूद इनका गैरकानूनी उपयोग जारी है। ई-सिगरेट्स को अक्सर पारंपरिक तंबाकू उत्पादों का सुरक्षित विकल्प बताया जाता है, जबकि सच यह है कि ये भी निकोटिन और अन्य हानिकारक रसायनों से भरे होते हैं। इसके अलावा, इनसे पर्यावरण को भी नुकसान होता है क्योंकि इनमें बैटरियां और प्लास्टिक इस्तेमाल होता है जो कचरे का हिस्सा बन जाते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि तंबाकू छोड़ना एक ऐसा फैसला है, जो किसी व्यक्ति के जीवन की दिशा ही बदल सकता है। तंबाकू छोड़ने के महज 20 मिनट बाद शरीर में सुधार शुरू हो जाता है। रक्तचाप और दिल की धड़कन सामान्य होने लगती है। कुछ ही हफ्तों में फेफड़ों का कामकाज बेहतर हो जाता है। एक साल के भीतर हार्ट अटैक का खतरा लगभग आधा हो जाता है और यदि कोई व्यक्ति बीस साल तक तंबाकू से दूर रहता है तो उसका स्वास्थ्य लगभग नॉन-स्मोकर के बराबर हो जाता है। कई डॉक्टरों का मानना है कि तंबाकू की लत से बाहर निकलने के लिए परिवार, समाज और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। हर बार जब कोई व्यक्ति डॉक्टर के पास जाए और यदि वह तंबाकू का सेवन करता है, तो उसे बार-बार प्रेरित किया जाना चाहिए कि वह इस आदत को छोड़े। इससे कैंसर, सीओपीडी, हृदय रोग, मुंह और फेफड़ों का कैंसर, मूत्राशय का कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से बचाव संभव है।

आज जब पूरा देश स्वास्थ्य जागरूकता की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में तंबाकू के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा होना बेहद जरूरी है। यह केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य का मामला नहीं, बल्कि पूरे समाज के स्वास्थ्य का सवाल है। इस वर्ल्ड नो टोबैको डे पर यह संकल्प लेना चाहिए कि हम न केवल खुद तंबाकू से दूर रहेंगे, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी इसके दुष्परिणामों से बचने के लिए प्रेरित करेंगे। तंबाकू छोड़ें, जीवन अपनाएं यही सबसे बड़ी जीत है।

दुर्लभ संकल्प शक्ति के अतुल्य नायक

सन् 2014 के पहले भारतीय जनमानस ने धीरे-धीरे यह मान लिया था कि आतंकवादी हमले हमारी नियति हैं और इसके बदले में कुछ किया नहीं जा सकता। यह धारणा तब और प्रबल हो गई जब मुंबई में 26/11 का हमला हुआ। पाकिस्तान से आये आतंकियों ने हमारे देश की आर्थिक राजधानी का सरेआम सीना छलनी कर दिया था। सारा देश आक्रोश से भर गया था, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री की लाचार चुप्पी ने देश की जनता और सेना दोनों का मनोबल धराशायी कर दिया था। उसके बाद भी आतंकी घटनाएँ होती रहीं, लेकिन केंद्र सरकार ने प्रतिकार नहीं किया और न ही उन निर्मम कुकृत्यों के प्रति भारतीय नेतृत्व में कभी बेचैनी देखी गई।

उलटे पाकिस्तान से शांति की गुहार लगाते हुए कश्मीर के अलगाववादी संगठनों और आतंकियों के आकाओं की खुशामद होती रही। फलत: भारतीय जनमानस में यह हीनता पैठ कर गई थी कि आतंक के खिलाफ अब ठोस कार्रवाई एक दिवास्वप्न है। यह धारणा और बलवती होती गई कि आतंकवाद से हमारे निर्दोष नागरिक मारे जाते रहेंगे और दोषियों का कुछ नहीं किया जा सकता।

26 मई 2014 को नरेंद्र मोदी जी के भारत के प्रधानमंत्री बनते ही यह धारणा टूट गई। साल 2016 में उरी में हमारे सैन्य टुकड़ी पर हुए आतंकी हमले का भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक करके मुंहतोड़ जवाब देकर अपने जवानों की मौत का बदला लिया। वहीं, 2019 में पुलवामा अटैक के बाद एयर स्ट्राइक करके भारतीय सैन्य बलों ने डंके की चोट पर पाकिस्तान में घुसकर आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूत किया। इन दोनों कार्रवाई ने पाकिस्तान सहित दुनिया की सभी आतंकी ताकतों को यह संदेश दे दिया था कि यह नया भारत है, जो सिर्फ बयानबाजी नहीं करता, बल्कि छेड़ने पर बमबारी करने में भी नहीं हिचकता है। पिछले एक दशक से पूरे विश्व। को ज्ञात है कि भारत अब पीड़ितों की तरह मुंह मोड़कर नहीं बैठता, अपितु वह घर में घुसकर जवाब भी देता है। यह अपने हिसाब से आतंकी अड्डों को मिट्टी में मिलाता है। इसकी सेनाएँ कोई सजावटी सामान नहीं हैं, यह साहस, शौर्य, सामर्थ्य की वैश्विक मिसाल हैं।

दुर्भाग्य से 22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकियों ने एक बार फिर हमारी छाती को छलनी किया, लेकिन वे भूल गए थे कि नया भारत अभी भी नरेंद्र मोदी के हाथों में ही है और दस साल में हमारी सेना का सामर्थ्य भी कई गुना बेहतर हो चुका है। इस कल्पना से ही रूह काँप जाती है कि 22 अप्रैल की नृशंस व बर्बर आतंकी घटना (जिसमें धर्म पूछकर लोगों को मारा गया) के समय यदि केंद्र में कांग्रेस की सरकार होती तो क्या होता? निंदा, विलाप और बयानबाजी के वही पुराने राग गाये जाते जो पिछले कई दशकों तक सुनाए जाते रहे, लेकिन देश की माटी का यह सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर नरेंद्र मोदी जी जैसा निर्णायक, निर्भीक एवं निडर नेतृत्व है, जिसने देश को न झुकने देने की सौगन्ध खायी हुई है, जिसने भारत की बेटियों की लाज बचाने का संकल्प लिया है, जिसने देश की एकता और अखंडता के लिए अपना सारा जीवन मां भारती को सौंप दिया है। जिसकी आतंकी देशों से निरर्थक बातचीत में कोई रुचि नहीं है। जिसने पाक अधिकृत कश्मीर को भारत में लाने का सपना पाला हुआ है। जिसका मत एकदम स्पष्ट है, आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं हो सकती, आतंकवाद और व्यापार एक साथ नहीं चल सकते और पानी व खून भी एक साथ नहीं बह सकता। जिसने देश की सीमाओं को अभेद्य बनाने का बीड़ा उठाया है। सौभाग्य से आज देश के पास ऐसा प्रधानमंत्री है, जिसने समूचे विश्वज के समक्ष भारत का 'न्यू नार्मल' रख दिया है, जिसमें आतंकवाद पर घड़ियाली आँसू नहीं बहेगा, बल्कि आतंकियों और उनके आकाओं का खून बहेगा एवं उनके फन उनकी माँद में घुसकर कुचले जाएँगे।

पहलगाम की बर्बरता से सारा देश आहत हुआ, उसका बदला लेने के लिए संकल्पित प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया और आतंकवादियों को मिट्टी में मिलाने के लिए भारतीय सेनाओं को पूरी छूट दी। अपने संकल्प को सिद्ध करते हुए मोदी सरकार ने भारत की ओर आँख उठाने का अंजाम आज हर आतंकी और उनके संगठनों को बता दिया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना ने अदम्य साहस दिखाते हुए पाकिस्तान के उन अड्डों का नामो-निशान मिटा दिया, जहां से भारत की बेटियों का सिंदूर उजाड़ने की ट्रेनिंग दी जाती थी। भारत की सेनाओं ने पाकिस्तान में आतंक के ठिकानों पर, उनके ट्रेनिंग सेंटर्स पर सटीक प्रहार किया। वैश्विक ताकतों को भी यह भरोसा नहीं था कि भारत पड़ोसी पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को चंद मिनटों में धूल में मिला सकता है, जो पाकिस्तान पहले किसी आतंकी घटना के बाद सीना तानकर चलता था, उसी पाकिस्तान ने इस बार भारत का रुख देखकर, भारतीय सेना और सरकार की संकल्प शक्ति के आगे तुरंत घुटने टेक दिए और ऑपरेशन सिंदूर रोकने की गुहार लगाने लगा। अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन के एक विशेषज्ञ अधिकारी माइकल रुबिन ने इसका वर्णन करते हुए कहा कि पाकिस्तान एक डरे हुए कुत्ते की तरह दुम दबाकर भाग रहा था।

नि:संदेह कुछ दशकों से आतंकवाद का घाव हमारे माथे पर कलंक की तरह चिपक गया था और हम सारी दुनिया में घूम-घूमकर केवल पीड़ित की तरह उस घाव पर मरहम लगाने की गुहार लगाते फिरते थे। कांग्रेस की सरकारों ने सात दशक यही किया, उसके नेता अपने देश की सेना के हाथ बाँधकर विश्वभर में आतंकवाद से पीड़ित होने का राग अलापते थे और दुनिया हमारी निर्दोष मौतों का तमाशा देखती थी। हीनता और निरीहता से ग्रसित पिछली सरकारों ने आतंकवाद की कमर तोड़ने की बजाय उन्हें ही मजबूत किया।

अब से 11 वर्ष पहले तक पाकिस्तानी आतंक की त्रासदी झेल रहा भारत, तुष्टिकरण की राजनीति के कारण सारे विश्व के समक्ष बौना दिखने लगा था। यह देश आत्मरक्षा का सदियों पुराना पाठ भी भुला चुका था। जबकि भारत की परंपरा में आत्म-रक्षा, धर्म-रक्षा, देश-रक्षा और स्त्री-रक्षा के लिए हथियार उठाने को भी धर्म बताया गया है। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन धर्म की रक्षा के लिए हिंसा भी धर्म के समान ही महत्वपूर्ण है। श्रीमद्भगवत गीता के इस मूल संदेश को हमारी सेनाएं तो अच्छी तरह से जानती रही हैं लेकिन पूर्ववर्ती सरकारों ने उनके हाथ बांध रखे थे। जब ऑपरेशन सिंदूर के जरिए उन्हें खुली छूट मिली तो सेना ने न केवल पाकिस्तानी आतंकियों को सबक सिखाया बल्कि, भारत की स्वदेशी रक्षा तकनीक, साहस, शौर्य, सामर्थ्य, संकल्प, एकजुटता का नया मानक गढ़ दिया। सेना ने 'यथा धर्मे तथा बले', इस मंत्र को साकार कर भारत के अभेद्य रक्षा कवच का शानदार प्रदर्शन करके भारतीय शक्ति को सिद्ध किया है। उसने विश्वन को बता दिया है कि यही भारत है और यही भारत की सेना है।

आज एक तरफ सारा देश तो भारतीय सेना की शौर्यगाथा गा रहा है तो दूसरी तरफ भारतीय सैन्य क्षमता की सराहना सारी दुनिया भी कर रही है। यह ऐसा समय है जब पहली बार पीएम मोदी के नेतृत्व में चले ऑपरेशन सिंदूरने कई दशकों से भारतीयों के माथे चिपके घाव को भर दिया है। मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनमानस पीड़ित भाव से बाहर आकर देश के अतुल्य पराक्रम और गौरव का प्रोत्साहन कर रहा है। न्याय की अखंड प्रतिज्ञा व इच्छाशक्ति देखकर देश अपनी सरकार व सेना की दृढ़ता, साहस एवं शौर्य का साक्षी बनकर आगे बढ़ रहा है। मोदी शासन के 11 साल के दुर्लभ संकल्प से सिद्धि की महान यात्रा में यह राष्ट्रजल-थल-नभ में सशक्त, संप्रभु, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बना है, यह भरोसा 140 करोड़ देशवासियों में गहरा हुआ है।

मूल्यबोध और राष्ट्रहित बने मीडिया का आधार

हिंदी पत्रकारिता दिवस हम 30 मई को मनाते हैं। इसी दिन 1826 को कोलकाता से पं.युगुल किशोर शुक्ल ने हिंदी भाषा के पहले पत्र %उदंत मार्तण्ड% की शुरुआत की थी। यह संयोग था या सुविचारित योजना कि उस दिन भारतीय तिथि से नारद जयंती भी थी। यानि हिंदी के पहले संपादक ने भी नारद जी अपने पुरखों के रुप में देखा। संपादकीय में उन्होंने हमें पत्रकारिता का उद्देश्य और बीज मंत्र भी यह लिखकर दिया- हिंदुस्तानियों के हित के हेत। इस नजरिए से मूल्यबोध और राष्ट्रहित हमारी मीडिया का आधार रहा है।

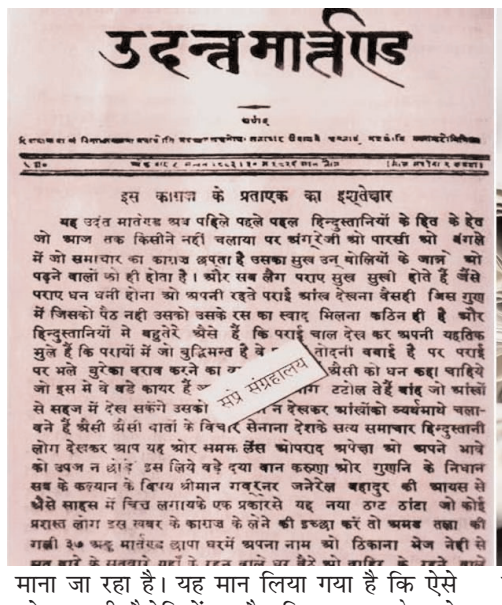

इन 200 सालों की यात्रा में हमने बहुत कुछ अर्जित किया है। आज भी मीडिया की दुनिया में आदर्शों और मूल्यों का विमर्श चरम पर है। विमर्शकारों की दुनिया दो हिस्सों में बंट गयी है। एक वर्ग मीडिया को कोसने में सारी हदें पार कर दे रहा है तो दूसरा वर्ग मानता है जो हो रहा वह बहुत स्वाभाविक है तथा काल-परिस्थिति के अनुसार ही है। उदारीकरण और भूमंडलीकृत दुनिया में भारतीय मीडिया और समाज के पारंपरिक मूल्यों का बहुत महत्त्व नहीं है।

एक समय में मीडिया के मूल्य थे सेवा, संयम और राष्ट्र कल्याण। आज व्यावसायिक सफलता और चर्चा में बने रहना ही सबसे बड़े मूल्य हैं। कभी हमारे आदर्श महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, विष्णुराव पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी और गणेश शंकर विद्यार्थी थे, ताजा स्थितियों में वे रुपर्ट मर्डोक और जुकरबर्ग हों? सिद्धांत भी बदल गए हैं। ऐसे में मीडिया को पारंपरिक चश्मे से देखने वाले लोग हैरत में हैं। इस अंधेरे में भी कुछ लोग मशाल थामे खड़े हैं, जिनके नामों का जिक्र अकसर होता है, किंतु यह नितांत व्यक्तिगत मामला माना जा रहा है। यह मान लिया गया है कि ऐसे लोग अपनी बैचेनियों या वैचारिक आधार के नाते इस तरह से हैं और उनकी मुख्यधारा के मीडिया में जगह सीमित है। तो क्या मीडिया ने अपने नैसर्गिक मूल्यों से भी शीर्षासन कर लिया है, यह बड़ा सवाल है।

सच तो यह है भूमंडलीकरण और उदारीकरण इन दो शब्दों ने भारतीय समाज और मीडिया दोनों को प्रभावित किया है। 1991 के बाद सिर्फ मीडिया ही नहीं पूरा समाज बदला है, उसके मूल्य, सिद्धांत, जीवनशैली में क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। एक ऐसी दुनिया बन गयी है या बना दी गई है जिसके बारे में काफी कुछ कहा जा चुका है। आज भूमंडलीकरण को लागू हुए चार दशक होने जा रहे हैं। उस समय के प्रधानमंत्री श्री पीवी नरसिंह राव और तत्कालीन वित्तमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने इसकी शुरुआत की तबसे हर सरकार ने कमोबेश इन्हीं मूल्यों को पोषित किया। एक समय तो ऐसा भी आया जब श्री अटलबिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में जब उदारीकरण का दूसरा दौर शुरू हुआ तो स्वयं नरसिंह राव जी ने टिप्पणी की हमने तो खिड़कियां खोली थीं, आपने तो दरवाजे भी उखाड़ दिए। यानी उदारीकरण-भूमंडलीकरण या मुक्त बाजार व्यवस्था को लेकर हमारे समाज में हिचकिचाहटें हर तरफ थी। एक तरफ वामपंथी, समाजवादी, पारंपरिक गांधीवादी इसके विरुद्ध लिख और बोल रहे थे, तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी अपने भारतीय मजूदर संघ एवं स्वदेशी जागरण मंच जैसे संगठनों के माध्यम से इस पूरी प्रक्रिया को प्रश्नांकित कर रहा था। यह साधारण नहीं था कि संघ विचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी ने वाजपेयी सरकार के वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा को 'अनर्थ मंत्री' कहकर संबोधित किया। खैर ये बातें अब मायने नहीं रखतीं। 1991 से 2025 तक गंगा में बहुत पानी बह चुका है और सरकारें, समाज व मीडिया तीनों 'मुक्त बाजार' के साथ रहना सीख गए हैं। यानी पीछे लौटने का रास्ता बंद है। बावजूद इसके यह बहस अपनी जगह कायम है कि हमारे मीडिया को ज्यादा सरोकारी, ज्यादा जनधर्मी, ज्यादा मानवीय और ज्यादा संवेदनशील कैसे बनाया जाए। व्यवसाय की नैतिकता को किस तरह से सिद्धांतों और आदर्शों के साथ जोड़ा जा सके। यह साधारण नहीं है कि अनेक संगठन आज भी मूल्य आधारित मीडिया की बहस से जुड़े हुए हैं।

इस सारे समय में पठनीयता का संकट, सोशल मीडिया का बढ़ता असर, मीडिया के कंटेट में तेजी से आ रहे बदलाव, निजी नैतिकता और व्यावसायिक नैतिकता के सवाल, मोबाइल संस्कृति से उपजी चुनौतियों के बीच मूल्यों की बहस को देखा जाना चाहिए। इस समूचे परिवेश में आदर्श, मूल्य और सिद्धांतों की बातचीत भी बेमानी लगने लगी है। बावजूद इसके एक सुंदर दुनिया का सपना, एक बेहतर दुनिया का सपना देखने वाले लोग हमेशा एक स्वस्थ और सरोकारी मीडिया की बहस के साथ खड़े रहेंगे। संवेदना, मानवीयता और प्रकृति का साथ ही किसी भी संवाद माध्यम को सार्थक बनाता है। संवेदना और सरोकार समाज जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है, तो मीडिया उससे अछूता कैसे रह सकता है। सही मायने में यह समय गहरी सांस्कृतिक निरक्षता और संवेदनहीनता का समय है। इसमें सबके बीच मीडिया भी गहरे असमंजस में है। लोक के साथ साहचर्य और समाज में कम होते संवाद ने उसे भ्रमित किया है। चमकती स्क्रीनों, रंगीन अखबारों और स्मार्ट हो चुके मोबाइल उसके मानस और कृतित्व को बदलने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे में मूल्यों की बात कई बार नक्कारखाने में तूती की तरह लगती है। किंतु जब मीडिया के विमर्शकार,संचालक यह सोचने बैठेंगे कि मीडिया किसके लिए और क्यों- तब उन्हें इसी समाज के पास आना होगा। रूचि परिष्कार, मत निर्माण की अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित करना होगा। क्योंकि तभी मीडिया की सार्थकता है और तभी उसका मूल्य है । लाख मीडिया क्रांति के बाद भी 'भरोसा' वह शब्द है जो आसानी से अर्जित नहीं होता। लाखों का प्रसार आपके प्राणवान और सच के साथ होने की गारंटी नहीं है। 'विचारों के अनुकूलन' के समय में भी लोग सच को पकड़ लेते हैं। मीडिया का काम सूचनाओं का सत्यान्वेषण ही है, वरना वे सिर्फ सूचनाएं होंगी-खबर या समाचार नहीं बन पाएंगी।कोई भी मीडिया सत्यान्वेषण की अपनी भूख से ही सार्थक बनता है, लोक में आदर का पात्र बनता है। हमें अपने मीडिया को मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों के साथ खड़ा करना होगा, यह शब्द आज की दुनिया में बोझ भले लगते हों पर किसी भी संवाद माध्यम को सार्थकता देने वाले शब्द यही हैं। सच की खोज कठिन है पर रुकी नहीं है। सच से साथ खड़े रहना कभी आसान नहीं था। हर समय अपने नायक खोज ही लेता है। इस कठिन समय में भी कुछ चमकते चेहरे हमें इसलिए दिखते हैं क्योंकि वे मूल्यों के साथ, आदर्शों की दिखाई राह पर अपने सिद्धांतों के साथ डटे हैं। समय ऐसे ही नायकों को इतिहास में दर्ज करता है और उन्हें ही मान देता है। आइए भारतीय मीडिया के पारंपरिक अधिष्ठान पर खड़े होकर हम अपने वर्तमान को सार्थक बनाएं।

जल जीवन मिशन के कार्यों का संयुक्त सचिव ने किया स्थल निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारत सरकार की संयुक्त सचिव फरीदा एम नायक ने जल जीवन मिशन के कार्यों का स्थल निरीक्षण किया। उन्होंने इंटेकबेल तथा डब्ल्यूटीपी का भ्रमण कर प्रगतिरत कार्यों की जानकारी ली। जल जीवन मिशन अन्तर्गत रीवा बाणसागर एवं टमस समूह जल प्रदाय योजना के कार्यों के निरीक्षण के दौरान संयुक्त सचिव ने आवश्यक निर्देश देते हुए कार्य को गति देने की बात कही। उन्होंने जल शोधन संयंत्र, पाइपलाइन क्लोरीनेशन टैंक, कैमिकल फिल्टरेशन सेक्शन, स्टोर तथा सप्लाई लाइन का निरीक्षण किया तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। भ्रमण के दौरान उन्होंने व्हीडब्ल्यूएससी की बैठक में एसटी के महिलाओं से चर्चा की। इस दौरान जल निगम के महाप्रबंधक चित्रांशु, प्रबंधक नीतेश सिंह, प्रबंधक जन सहभागिता डॉ. नंद किशोर पचौरी तथा एफक्यूसीटीपीआई के टीएल व डीडीएल उपस्थित रहे।

भारत निर्वाचन आयोग की बड़ी पहल -प्रारंभ हुआ अब तक का सबसे बड़ा प्रशिक्षण बैच

मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार ने दी विधिक प्रावधानों की जानकारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की आठवीं श्रृंखला का शुभारंभ आज नई दिल्ली स्थित भारत अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र और निर्वाचन प्रबंधन संस्थान में हुआ। इस प्रशिक्षण में छत्तीसगढ़ के 96 निर्वाचन अधिकारी सक्रिय रूप से शामिल हुए हैं।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए छत्तीसगढ़, हरियाणा, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश से आए बूथ लेवल अधिकारी, बीएलओ सुपरवाइज़र्स, ईआरओ तथा डीईओ को संबोधित किया। उन्होंने निर्वाचन व्यवस्था को पारदर्शी, सुसंगत और विधिसम्मत बनाए रखने में इन अधिकारियों की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। उल्लेखनीय है कि यह अब तक का सबसे बड़ा प्रशिक्षण बैच है, जिसमें कुल 373 प्रतिभागी शामिल हैं। जिनमें से उत्तर प्रदेश से 118, मध्यप्रदेश से 130, छत्तीसगढ़ से 96 और हरियाणा से 29 अधिकारी हैं। इस श्रृंखला के माध्यम से आयोग दो माह में अब तक 3,720 से अधिक मैदानी चुनाव अधिकारियों को प्रशिक्षण दे चुका है।

अपने संबोधन में मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 एवं 1951, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1960, निर्वाचन संचालन नियम 1961 तथा आयोग द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों की जानकारी को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करेगा कि चुनाव की समस्त प्रक्रियाएँ विधिक प्रावधानों के अनुरूप संपन्न हों।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार ने प्रतिभागियों को अवगत कराया कि प्रशिक्षण के दौरान वे लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 24 (जिला मजिस्ट्रेट/कलेक्टर के समक्ष प्रथम अपील) और धारा 24(राज्य/केंद्र शासित प्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के समक्ष द्वितीय अपील) की प्रक्रिया से भी परिचित रहें। उन्होंने बीएलओ व पर्यवेक्षकों को सलाह दी कि वे क्षेत्रीय सत्यापन के समय इन प्रावधानों की जानकारी मतदाताओं को भी दें। उल्लेखनीय है कि 6 से 10 जनवरी 2025 के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के बाद छत्तीसगढ़, हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश से किसी प्रकार की अपील प्राप्त नहीं हुई - जो क्षेत्रीय अधिकारियों के सतर्क, व्यवस्थित और तकनीकी रूप से दक्ष होने का प्रमाण है। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मतदाता पंजीकरण, फॉर्म प्रबंधन और चुनाव प्रक्रियाओं के व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करना है।

इसके अंतर्गत प्रतिभागियों को ईवीएम , वीवीपैट और मॉक पोल से संबंधित तकनीकी पहलुओं पर विशेष सत्रों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आईटी टूल्स के उपयोग पर भी विशेष बल दिया गया है। इससे अधिकारी डिजिटल प्रक्रिया, डेटा प्रबंधन और निर्वाचन प्रक्रिया में तकनीकी दक्षता प्राप्त कर सकेंगे, जिससे भविष्य के चुनाव अधिक पारदर्शी और त्रुटिरहित बनाए जा सकेंगे। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आयोजित यह प्रशिक्षण श्रृंखला लोकतंत्र की मजबूती में एक और ठोस कदम है, जिसमें छत्तीसगढ़ के अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी राज्य की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह सुनिश्चित करता है कि आने वाले चुनावों में भी निर्वाचन कार्य में नियोजित अधिकारी एवं कर्मचारी पारदर्शिता और प्रभावशीलता के उच्चतम मानकों का पालन करेंगे।

सुशासन तिहार 2025 के अंतर्गत ग्राम पंचायत सेमरिहा में आयोजित हुआ विशेष जनसेवा शिविर

1368 लोगों की समस्याओं का हुआ समाधान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले के विकासखंड भरतपुर के ग्राम सेमरिहा में सुशासन तिहार 2025 के तीसरे चरण के अंतर्गत एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया यह आयोजन 8 अप्रैल से 11 अप्रैल तक आयोजित जनकल्याणकारी कार्यक्रमों की श्रृंखला का हिस्सा रहा। शिविर की शुरुआत छत्तीसगढ़ महतारी की प्रतिमा का दीप प्रज्वलन के साथ हुई, दीप प्रज्वलन के पश्चात जनप्रतिनिधियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मान किया गया।

शिविर में शासन की विभिन्न जनहितैषी योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को दी गई। सभी विभागों से प्राप्त कुल 1501 आवेदनों में से 1368 का त्वरित निराकरण किया गया, जबकि शेष 133 आवेदन प्रक्रियाधीन हैं। ग्रामीणों को बताया गया कि यह शिविर न केवल जानकारी देने का माध्यम है, बल्कि समस्याओं के तत्काल समाधान का भी एक मंच है। शिविर में नौढ़िया, हर्रई, बरहोरी, ओटनिया, सेमरिहा, च्यूल, भरतपुर तथा कुंवारी के सैकड़ों ग्रामीणों ने भाग लिया। शिविर में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे, जिन्होंने अपने-अपने विभाग से संबंधित चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्य शासन की योजनाओं का क्रियान्वयन कैसे किया जा रहा है और आप इनका लाभ कैसे ले सकते हैं। कार्यक्रम में जल जीवन मिशन के अंतर्गत जल जागरूकता अभियान पर विशेष चर्चा हुई। अधिकारियों ने ग्रामीणों को जल संरक्षण और घरेलू नल कनेक्शन की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। उपस्थित लोगों ने सामूहिक रूप से 'पानी बचाओ' की शपथ ली और जल स्रोतों के संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया।

शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया जिसमें जनपद पंचायत द्वारा अर्चना सिंह, सुनीता, सुषमा, पूर्णिमा, सुखमंती बैगा एवं पूनम साहू को नवीन राशन कार्ड वितरित किए गए। शिविर में जिला पंचायत सदस्य सुखमंती सिंह, अनिता चौधरी, बेला कंवर, जनपद पंचायत अध्यक्ष माया प्रताप सिंह, जनपद सदस्य सुख लाल मरावी, कैलाश सिंह,सविता सिंह, रीना सिंह, सुखलाल, मण्डल अध्यक्ष नरेश यादव, पूर्व मण्डल अध्यक्ष पवन शुक्ला, पूर्व जिला पंचायत सदस्य रविशंकर सिंह, और धर्मपाल मरावी, आदित्य गुप्ता, सरपंच लाल देव सिंह, जय करन सिंह, ललन सिंह, एसडीएम शशि शेखर मिश्रा, सीईओ अजय सिंह राठौर, नीरज कांत तिवारी तहसीलदार सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और स्थानीय जनप्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

कोयला के अवैध परिवहन करते ट्रैक्टर जप्त

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर के निर्देश एवं पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन में जिले में लगातार अवैध कोयले के परिवहन, भण्डारण पर कार्यवाही की जा रही है। खनिज अधिकारी दयानन्द तिग्गा ने बताया की जिले के पोड़ी, चिरमिरी क्षेत्र भ्रमण के दौरान ग्राम चिताझोर में 01 रेत से भरे ट्रेक्टर वाहन महिंद्रा 275 डीआई लाल रंग चेचीस नम्बर 3402 को रोके जाने पर ट्रेक्टर ड्राइवर मौक़े से फरार हो गया।

ट्रेक्टर के ट्रॉली की जब जाँच की गई तो रेत के भीतर खनिज कोयला लोड किया गया था। जिसे मौक़े पर ही जप्त कर थाना पोड़ी लाया जाकर सुरक्षार्थ रखा गया है। बता दे इन दिनों खनिज और पुलिस विभाग की टीम लगातार कोयले के अवैध गतिविधि मे संलिप्त लोगों पर नज़र रखे हुए है। जहा भी कोयले के अवैध गतिविधि की शिकायत प्राप्त होती है, वहा तत्काल कार्यवाही की जा रही है, विगत दिनों खनिज विभाग ने लगातार ताबड़तोड़ छापेमारी कार्यवाही किया था।

जिसमे लगभग 20 टन कोयला को जप्त कर संबंधितो के विरुद्ध खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम 1957, छत्तीसगढ़ खनिज (खनन, परिवहन तथा भण्डारण) नियम 2009 के तहत एवं पुलिस विभाग द्वारा बी. एन. एस. की सुसंगत धाराओं में कार्यवाही की गयी है। भविष्य में भी इस प्रकार की कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी।

देवी अहिल्याबाई होल्कर जयंती पर ग्राम चैनपुर में संगोष्ठी का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम शर्मा के मार्गदर्शन में देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती के अवसर पर ग्राम पंचायत चैनपुर में स्वच्छता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, रोज़गार सहायक एवं स्व सहायता समूह की महिलाये उपस्थिति रही।

स्वच्छता संगोष्ठी में ग्राम को ओडीएफ प्लस मॉडल बनाए जाने एवं 31 मई को सामुदायिक सहभागिता से सार्वजनिक स्थलों दार्शनिक स्थलों पर्यटन स्थलों जल स्रोतों के पास श्रमदान किये जाने हेतु चर्चा की गई एवं स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य करने के लिए ग्राम पंचायत साल्ही परसगढ़ी चनवारीडांड के सरपंच को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही सचिव ग्राम पंचायत नारायणपुर एवं रोजगार सहायक ग्राम पंचायत बुंदेली एवं स्वच्छता ग्राही को स्वच्छता किट एवं श्रीफल द्वारा सम्मानित किया गया।

एमसीबी प्रेस क्लब में हिंदी पत्रकारिता दिवस का किया गया आयोजन

पत्रकारों को वितरित किए गये आई कार्ड

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। एमसीबी प्रेस क्लब मनेंद्रगढ़ में आज हिन्दी पत्रकारिता दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जिले के संयुक्त कलेक्टर सी. एस. पैकरा, एसडीओपी एल. एक्स. टोप्पो, स्वास्थ्य एवं जिला चिकित्सा अधिकारी डॉ.अविनाश खरे, जनसम्पर्क अधिकारी लोकेश्वर सिंह एवं डीपीए डॉ. पुष्पेंद्र सोनी इस कार्यक्रम में मौजूद रहे।

वही कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। ज्ञात हो कि पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है क्योंकि यह समाज और देश की सच्चाई को आम जनता तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। पत्रकारिता के माध्यम से देश और समाज की महत्वपूर्ण घटनाओं, मुद्दों और समाचारों को जनता तक पहुंचाया जाता है, जिससे लोगों को सही जानकारी और जागरूकता मिलती है।

पत्रकारिता के इसी महत्व को प्रोत्साहित करने के लिए हर साल 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है। इस दिन का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि इसी दिन यानी 30 मई साल 1826 में, हिंदी का पहला अखबार "उदन्त मार्तण्ड" प्रकाशित हुआ था। जिसके संपादक पंडित जुगल किशोर शुक्ला थे। इस अवसर पर एमसीबी प्रेस क्लब के संयोजक सतीश गुप्ता ने कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सभी अतिथियों को हिन्दी पत्रकारिता दिवस की बधाई दी व कहा कि आज बहुत ही सौभाग्य का दिन है कि हमारे जिले के प्रेस क्लब भवन में यह कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

जिसमें जिले के अधिकारी सहित जिले के पत्रकार साथी मौजूद हैं इस अवसर पर सभी पत्रकारों को एमसीबी प्रेस क्लब के आई कार्ड वितरण किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से प्रेस क्लब के अध्यक्ष रणजीत सिंह, राम प्रसाद गुप्ता, धीरेन्द्र विश्वकर्मा, रमन सिंह, वरुण चक्रवर्ती , रफीक मेमन, श्रीराम बरनवाल, प्रशांत तिवारी, सुददुलाल वर्मा, महेश साहू, अशोक कुजूर, खगेन्द्र यादव, नियाज अली, अविनाश चन्द्रा, राजेश सिन्हा, नीलेश प्रताप सिंह, तौशिफ रजा, राहुल वल्लव द्विवेदी, गुरदीप अरोड़ा, सुरेश बिनोचा, अरूण श्रीवास्तव, सहित अन्य पत्रकार उपस्थित रहे।

रीवा की खबरें

नौढ़िया ग्राम जल स्वाबलंबी ग्राम के तौर पर चयनित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जिले में स्वावलंबी ग्राम योजना आरंभ की गई हैं। इसका मुख्य उद्देश्य जल संकट से निपटने के लिये विभिन्न जल संरक्षण, जल संचयन और जल के पुनर्चक्रण उपायों को लागू करना है। इस अभियान में न केवल जल की उपलब्धता को बढाने की दिशा में कार्य किया जायेगा बल्कि जल के संतुलित उपयोग को सुनिश्चित कराया जावेगा ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिये जल का संरक्षण किया जा सके। कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन ने बताया कि जिले अंतर्गत ग्राम नौढ़िया जनपद पंचायत मऊगंज, को "जल स्वाबलंबी ग्राम" के रूप में चयनित किया गया है। इस ग्राम में पानी की आवश्यकता का आंकलन कर वाटर बजट तैयार किया जायेगा। तदुपरान्त जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम में नवीन खेन तालाब, भू-जल संवर्धन हेतु कुआं, कुआं रिचार्ज, सतही जल संग्रहण हेतु कन्टूर, बंडिंग, कन्दर ट्रेंच, गेबियन, गली प्लग, बोल्डर चेकडेम, स्टॉप डैम, रिचार्ज पिट, पाँड, परकोलेशन टैंक, तालाब, अमृत सरोवर इत्यादि और भू जल संवर्धन के कार्य, शासकीय नहर का प्लान तैयार कर युद्ध स्तर पर वाटर कंजरवेशन के अधिकाधिक कार्य कराये जायेंगे। जल संरक्षण के विभिन्न उपायों को शामिल किया जाये ताकि वर्षा जल संचयन, वाटरशेड प्रबंधन, जल पुनर्चकण और जल आपूर्ति की दक्षता को बढ़ाने के लिए सस्ते और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल उपाय किया जा सके। पुराने जल स्त्रोतों के पुनर्निर्माण और नई जल आपूर्ति योजनाओं को प्रारंभ करने के साथ ही जल गंगा संवर्धन अभियान के अन्तर्गत जनभागीदारी से स्त्रोतों के आसपास एवं अन्य उपलब्ध स्थानों पर पौधरोपण के कार्य आवश्यक रूप से किये जायेंगे।कलेक्टर ने बताया कि कार्ययोजना में ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधियों, गैर सरकारी संगठनों और संबंधित सरकारी एजेंसियों की सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी। जल गंगा यात्रा में ग्रामों / ग्राम पंचायतों के क्लस्टर बनाकर अधिकारियों की टीम बनाकर प्रत्येक ग्राम में जनजागरूकता हेतु रैली निकालकर जन संवाद कराया जाना सुनिश्चित किया जायेगा तथा ग्रामवासियों के बीच जल संरक्षण के प्रति जागरूकता कार्यकम आयोजित किया जाये। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायतों और जल समितियों का गठन किया जाए ताकि वे जल प्रबंधन में भागीदार बन सकें। प्रत्येक किसान अपनी स्वेच्छा से अपने खेत में पौंड का निर्माण करें। नौढ़िया ग्राम को आगामी 03 वर्षों में जल स्वावलंबी ग्राम बनाने के उद्देश्य से मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत रीवा / मऊगंज को नोडल अधिकारी एवं अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), अनुविभाग मऊगंज को सहायक नोडल नियुक्त किया गया है।

श्रमोदय आदर्श आईटीआई में प्रवेश के लिए पंजीयन की अंतिम तिथि आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। श्रमोदय आदर्श आईटीआई भोपाल में संचालित 8 ट्रेडों में प्रवेश की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। आवेदक डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डीएसडी डॉट एमपी डॉट जीओभी डॉट इन पर 31 मई तक पंजीयन कर सकते हैं। इस संबंध में श्रम पदाधिकारी प्रिया अग्रवाल ने बताया कि संचालित ट्रेड तकनीशियन मेकाट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रीशियन, सीएनसी मशीनिंग तकनीशियन, सिविल इंजीनियरिंग असिस्टेंट के लिये दो वर्षीय पाठ्यक्रम तथा फैशन डिजाइन एण्ड टेक्नोलॉजी, इंटीरियर डिजाइन एण्ड डेकोरेशन आयओटी स्मार्ट सिटी, वेल्डर एक वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु आवेदन किये जा सकते हैं। वेल्डर के लिए प्रवेश योग्यता आठवीं उत्तीर्ण है जबकि शेष सभी सात पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। मध्यप्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मण्डल के पंजीकृत श्रमिक एवं उनके आश्रित परिवार के सदस्य श्रमोदय आदर्श आईटीआई में एक वर्षीय एवं दो वर्षीय व्यवसाहय में निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है।

आधार पंजीयन के लिए परियोजना कार्यालय में तैनात होंगे कम्प्यूटर आपरेटर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग को भारत सरकार के सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आधार पंजीयन के लिए अधिकृत किया गया है। विभाग के सभी परियोजना कार्यालयों में स्थाई आधार पंजीयन की सुविधा दी जा रही है। इस संबंध में जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग प्रतिभा पाण्डेय ने बताया कि आधार पंजीयन के लिए परियोजना कार्यालयों को आधार मशीनें, टैबलेट, मोबाइल किट आदि उपलब्ध करा दिए गए हैं। आधार पंजीयन के लिए सभी परियोजना कार्यालय में कम्प्यूटर आपरेटर तैनात किए जा रहे हैं। इसके लिए पात्र व्यक्ति 3 जून तक जिला कार्यक्रम अधिकारी कार्यालय महिला एवं बाल विकास विभाग कलेक्ट्रेट रीवा में आवेदन कर सकते हैं।

अभिलेख न देने पर होगी एफआईआर दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग कमलेश्वर सिंह ने विभाग के दो निलंबित कर्मचारियों विकास कुमार तिवारी सहायक ग्रेड तीन और शिव प्रसाद पटेल सहायक वर्ग तीन को शासकीय अभिलेख तीन दिवस में उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। जिला संयोजक ने कहा है कि निलंबित कर्मचारियों द्वारा कारण बताओ सूचना पत्र का तय समय सीमा में उत्तर नहीं दिया गया है तथा महत्वपूर्ण विभागीय अभिलेख उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। दोनों निलंबित कर्मचारी कार्यालय में उपस्थित होकर अपना प्रभार निर्दिष्ट कर्मचारियों को सौंपते हुए समस्त रिकार्ड उपलब्ध कराएं। अभिलेख न देने पर आपराधिक प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी।

खिलाई जा रही है फाइलेरिया रोधी दवा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला मलेरिया अधिकारी स्मृता नामदेव ने बताया है कि रीवा और मऊगंज जिले के फाइलेरिया से अति प्रभावित क्षेत्रों में फाइलेरिया रोधी दवा दी जा चुकी है। जिन क्षेत्रों में दवा का वितरण नहीं हो पाया था वहाँ 30 मई से दवा खिलाने का अभियान शुरू किया गया है। फाइलेरिया को समूल नष्ट करने के लिए दोनों जिलों में प्रभावित इलाकों का चिन्हांकन करके दवाई दी जा रही है। फाइलेरिया के संभावित क्षेत्रों में संभावित रोगियों के खून के नमूने लेकर जांच कराए जाने पर पॉजिटिव मरीज पाए गए जिसके कारण दवा खिलाने का अभियान शुरू किया गया है। अभियान के दौरान रीवा जिले के जवा विकासखण्ड के ग्राम हरदोली, ग्राम मझगवां, गंगेव विकासखण्ड के रघुनाथगंज में दवा खिलाई जा रही है। मऊगंज जिले में नगर पंचायत नईगढ़ी के वार्ड क्रमांक 12 तथा हनुमना विकासखण्ड के चुने हुए गांवों में दवा दी जा रही है। उन्होंने अभियान में शामिल क्षेत्रों के निवासियों से फाइलेरिया की निःशुल्क दवा का सेवन करने का अनुरोध किया है।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस आगामी 31 मई को मनाया जायेगा। मद्यपान तथा मादक पदार्थों, नशीली दवाईयों एवं शराब तथा विभिन्न प्रकार के नशे से होने वाले दुष्परिणामों से समाज, युवाओं को अवगत कराने हेतु नशामुक्ति के लिये जनजागृति कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज के युवाओं एवं बच्चों को तम्बाकू से बने उत्पादों के सेवन से होने वाली गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, टीव्ही, ह्रदय रोग आदि से बचाव करने के लिये जन जागरूकता लाना है। विभिन्न विभागों लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, स्कूल शिक्षा, पुलिस, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, आयुष, महिला एवं बाल विकास, जनजातीय कार्य विभाग, अनुसूचित जाति कल्याण विभाग की सहभागिता एवं जन अभियान परिषद, प्रजापिता ब्राम्हकुमारी, गायत्री परिवार, स्वैच्छिक संस्थाओं तथा धार्मिक संगठन के सहयोग से कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे ने बताया कि 31 मई को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जायेगी। स्वास्थ्य विभाग अन्तर्गत संचालित तम्बाकू नियंत्रण केन्द्र द्वारा तम्बाकू उत्पादों के सेवन से होने वाली गंभीर बीमारियों पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी लगाई जायेगी।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश- नीट-पीजी एग्जाम एक शिफ्ट में हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट-पीजी परीक्षा एक ही शिफ्ट में आयोजित की जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को यह आदेश दिया। छात्रों ने 2 शिफ्ट में परीक्षा के खिलाफ याचिका दाखिल की थी। उनका कहना था कि 2 शिफ्ट में एग्जाम से क्वेश्चन पेपर के डिफिकल्टी लेवल में फर्क होता है, जो फेयर इवैल्युएशन नहीं है। परीक्षा में हासिल किए गए नंबर्स में भी फर्क आ जाता है। नीट-पीजी एग्जाम 15 जून को होना है जिसके लिए एडमिट कार्ड 2 जून को जारी होंगे। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने मामले की जल्द सुनवाई की है। बेंच ने कहा- ये तर्क माना नहीं जा सकता कि एग्जाम कराने के लिए (नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन) को पर्याप्त सेंटर नहीं मिले। 2 शिफ्ट में एग्जाम कराना फेयर नहीं है। दो पेपर्स का डिफिकल्टी लेवल कभी एक जैसा नहीं हो सकता। नॉर्मलाइजेशन का इस्तेमाल एक्सेप्शनल केसेज में होना चाहिए, न कि रूटीन परीक्षाओं में। इस साल का एग्जाम 15 जून को होना है। अभी भी एग्जामिनेशन बॉडी तय करने और सेंटर्स चुनने के लिए 2 सप्ताह से ज्यादा का समय बाकी है। इसके बावजूद अगर और समय की जरूरत होती है तो आवेदन कर सकते हैं।

एमपी-यूपी में 10 दिन बाद मानसून आएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। 24 मई को मानसून की एंट्री के बाद यह 17 राज्यों में दस्तक दे चुका है। सिर्फ छह दिनों में देश में अब तक 33त्न ज्यादा बारिश हो चुकी है। गुरुवार को यह पूर्वोत्तर के बचे हिस्से और फिर सिक्किम पार कर पश्चिम बंगाल के हिमालयी क्षेत्रों में पहुंच गया। मौसम विभाग के मुताबिक, शुक्रवार को यह बिहार व बाकी पश्चिम बंगाल में पहुंच सकता है। हालांकि, अब इसकी रफ्तार थमने के आसार हैं। बंगाल की खाड़ी में बना दबाव वाला क्षेत्र सागर द्वीप से होते हुए बांग्लादेश की ओर बढ़ेगा। यह डिप्रेशन उत्तर भारत की ओर मानसून को धकेलने के बजाय विपरीत दिशा में खींचेगा। इससे मानसून की गति धीमी हो जाएगी। दो-तीन दिनों में असर दिखेगा। अनुमान है कि मानसून पर एक हफ्ते से 10 दिन का ब्रेक लग सकता है, जिससे मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश व उत्तर भारत के कई हिस्सों में बारिश का इंतजार बढ़ सकता है।

कमल हासन बोले- गलत नहीं हूं तो माफी नहीं मांगूंगा

चेन्नई (एजेंसी)। एक्टर और नेता कमल हासन ने कन्नड़ भाषा पर अपनी टिप्पणी को लेकर जारी विवाद के बीच माफी मांगने से इनकार कर दिया है। उन्होंने चेन्नई में शुक्रवार को अपनी फिल्म ठग लाइफ के प्रमोशन के दौरान कहा कि अगर मैं गलत नहीं हूं तो माफी नहीं मांगूंगा। हासन ने कहा, भारत एक लोकतांत्रिक देश है। मैं कानून और न्याय में विश्वास करता हूं। कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और केरल के लिए मेरा प्यार सच्चा है।

अहिल्या वाहिनी महिला बाइक रैली, नारी सशक्तिकरण का प्रतीक है : मुयमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के पावन अवसर पर निकाली जा रही अहिल्या वाहिनी महिला बाइक रैली महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है। यह रैली, समृद्ध भारतीय संस्कृति में विद्यमान नारी सम्मान और महिला की सशक्त छवि की अभिव्यक्ति भी है।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर हर काल में सुशासन की प्रतीक रही है। जब विदेशी आक्रांता दिल्ली से बैठकर भारत पर शासन कर रहे थे, तब लोकमाता ने महिला सशक्तिकरण की अद्भुत मिसाल पेश की। रानी दुर्गावती, वीरांगना लक्ष्मीबाई और रानी अवंती बाई ने भी नारी सम्मान को ऊंचाई दी। रानी अहिल्याबाई एक आदर्श बहू, आदर्श मां, आदर्श पत्नी और महान शासिका थीं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत दुःखों को शक्ति में बदलते हुए नारी सशक्तिकरण, महिला शिक्षा, धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार और जनकल्याण के अनेक कार्य किए। मां अहिल्या ने अपनी प्रशासनिक दक्षता और सामाजिक समर्पण से बताया कि इच्छाशक्ति और सेवा भाव से ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती के उपलक्ष्य में प्रदेश में मनाए जा रहे जनकल्याणी पर्व के अंतर्गत शौर्य स्मारक पर अहिल्या वाहिनी महिला बाइक रैली के शुभारंभ अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अहिल्या वाहिनी महिला बाइक रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया।

कांग्रेस बोली- केंद्र की विदेश नीति नाकाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने शुक्रवार को 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर मोदी सरकार की विदेश नीति को नाकाम बताया। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि सरकार की फेल डिप्लोमैसी और कमजोर विदेश नीति की वजह से भारत की छवि को नुकसान हुआ।उन्होंने कहा कि कोई देश पाकिस्तान को आतंकी देश नहीं कह रहा। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी किसी ने भी आपके समर्थन में बयान नहीं दिया। यहां तक कि रूस ने भी पाकिस्तान के साथ पुरानी स्टील मिल दोबारा शुरू करने के लिए एमओयू साइन किया है।

मोदी कानपुर में पहलगाम हमले के पीड़ित परिवार से मिले

कानपुर (एजेंसी)।पीएम नरेंद्र मोदी शुक्रवार को कानपुर पहुंचे। उन्होंने पहलगाम हमले में मारे गए शुभम द्विवेदी के परिवार से 8 मिनट मुलाकात की। चकेरी एयरपोर्ट पर पीएम मोदी के सामने शुभम की पत्नी ऐशन्या, पिता संजय, मां सीमा भावुक हो गईं। सभी ने रोते हुए हाथ जोड़े। कहा, हमारे बेटे की मौत जाया न होने पाए। शुभम की पत्नी ऐशन्या फफक-फफक रोने लगीं। मोदी भी उनके आंसू देखकर भावुक हो गए। कहा- आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर थमा है...खत्म नहीं हुआ, यह आगे भी जारी रहेगा। पीएम मोदी ने पिता संजय द्विवेदी के कंधे पर हाथ रखकर उन्हें ढांढस

बंधाया। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकियों ने 26 पर्यटकों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। कानपुर के शुभम को उनकी पत्नी ऐशन्या के सामने आतंकियों ने गोली मारी थी। शुभम की पत्नी ऐशन्या ने पति को शहीद का दर्जा देने की मांग की थी।

ऑर्मी चीफ जम्मू-कश्मीर में फॉरवर्ड पोस्ट पर पहुंचे

नई दिल्ली/श्रीनगर (एजेंसी)। आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी शुक्रवार को जम्मू-कश्मीर के सुंदरबनी सेक्टर में फॉरवर्ड पोस्ट पहुंचे। यहां उन्होंने यूनिट्स की तैयारियों और फॉर्मेशंस का जायजा लिया। साथ ही नियंत्रण रेखा पर सुरक्षा और ऑपरेशन डायनामिक्स भी देखी। जनरल द्विवेदी ने जवानों से बात की और ऑपरेशन सिंदूर में दुश्मन के खिलाफ अदम्य साहस दिखाने के लिए तारीफ की। वहीं, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पुंछ में पाकिस्तान की गोलाबारी से प्रभावित लोगों से मुलाकात की। शाह दो दिनों के जम्मू-कश्मीर दौरे पर हैं। वे गुरुवार शाम जम्मू पहुंचे थे। उन्होंने कल देर रात राजभवन में हाई लेवल सिक्योरिटी रिव्यू मीटिंग की। ऑपरेशन सिंदूर के बाद उनका पहला जम्मू-कश्मीर दौरा है। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने ऑपरेशन सिंदूर पर कोलंबिया सरकार की प्रतिक्रिया की आलोचना की। थरूर ने कोलंबिया के बोगोटा में कहा, कोलंबियाई सरकार ने भारत के प्रति सहानुभूति जताने के बजाय ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान में हुई जानमाल की नुकसान पर दुख जताया। भारत इससे निराश है। भारत ने सेल्फ-डिफेंस में हमला किया था। हमला करने वालों और बचाव करने वालों में फर्क होता है।

अंकिता भंडारी मर्डर-भाजपा नेता के बेटे समेत 3 को उम्रकैद

कोटद्वार (एजेंसी)। उत्तराखंड के बहुचर्चित अंकिता भंडारी हत्याकांड में भाजपा नेता और पूर्व मंत्री के बेटे पुलकित आर्य समेत 3 को कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। पुलकित के अलावा उसके दो कर्मचारी सौरभ भास्कर और अंकित गुप्ता को भी सजा सुनाई गई है। कोटद्वार जिला कोर्ट ने इस मामले में 2 साल 8 महीने के बाद फैसला दिया है। तीनों दोषियों पर 50 -50 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है। लाइव लॉ के अनुसार कोर्ट ने तीनों को दोषी मानते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई है। अंकिता ऋषिकेश में पुलकित आर्या के रिसॉर्ट में रिसेप्शनिस्ट थी। 18 सितंबर, 2022 को अंकिता गायब हो गई थी। 24 सितंबर 2022 को अंकिता का शव चीला नहर में मिला था। कोर्ट का फैसला आने से पहले अंकिता भंडारी के पिता वीरेंद्र सिंह ने बेटी के हत्यारों को फांसी की सजा देने की मांग की थी। उन्होंने कहा- जिन दरिंदों ने उनकी निर्दोष बेटी को मारा, उन्हें मौत की सजा मिलनी चाहिए।

एनडीए लड़कियों का पहला बैच पास

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज, 30 मई को एनडीए से महिला कैडेट्स का पहला बैच पास हुआ। इतिहास में ये पहली बार है जब 17 महिला कैडेट्स 300 से ज्यादा पुरुषों के साथ एनडीए से ग्रेजुएट हुई हैं। ये सभी इंडियन आर्मी, नेवी और एयर फोर्स जॉइन करेंगी।

साल 2021 में सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को एनडीए में शामिल होने के लिए अनुमति दी थी। दरअसल, बीते 75 सालों से महिलाओं को टेरिटोरियल आर्मी में ऑफिसर पदों पर भर्ती का प्रावधान नहीं था। इसके खिलाफ कुश कालरा ने दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी।

ये मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा, जहां 18 अगस्त 2021 को कोर्ट ने पहली बार लड़कियों के लिए एनडीए में शामिल होने के दरवाजे खोल दिए। इस फैसले के बाद, 2022 में पहली बार 17 महिला कैंडिडेट्स का बैच एनडीए में शामिल हुआ, जो आज ग्रेजुएट हुए हैं। पासिंग आउट परेड पुणे के खडकवासला स्थित एनडीए परिसर में हुई। रिटायर्ड सेना प्रमुख जनरल वी के सिंह ने परेड की सलामी ली। उन?होंने कैडेट्स को प्रेसिडेंट्स अवॉर्ड दिए। जनरल सिंह ने कहा कि इतिहास में पहली बार इस ग्राउंड से लड़कियों का बैच भी पास हो रहा है। ये नारी शक्ति को सलाम है। उन्होंने कहा कि ये लड़कियों के लिए ट्रेनिंग का अंत नहीं है।

भाजपा सांसद रोज 15-20 किमी पैदल चलेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को मोदी सरकार घर-घर तक पहुंचाने की तैयारी कर रही है। भाजपा के एक सीनियर लीडर ने बताया कि 9 जून से इसकी शुरुआत होगी। इसी दिन नरेंद्र मोदी ने बतौर पीएम तीसरी बार शपथ ली थी यानी मोदी 3.0 की शुरुआत हुई थी। अभियान का मूल मकसद मोदी 3.0 सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाना है। इसके लिए जनसंपर्क के दौरान ऑपरेशन सिंदूर को हाईलाइट करने वाले पंफलेट भी बांटे जाएंगे। केंद्र के सभी मंत्री, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के सांसद और संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारी इस अभियान में शामिल होंगे। एक महीने तक चलने वाले इस कार्यक्रम में सभी लोकसभा सांसदों अपने क्षेत्र में रोजाना 15-20 किमी तक पैदल यात्रा करनी है और मंत्री हफ्ते में दो दिन 20-25 किमी यात्रा कर जनसंपर्क करेंगे। ऑपरेशन सिंदूर में शामिल विभागों पर शॉर्ट फिल्म बनेगी ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जिस भी विभाग ने अपना योगदान किसी भी रूप में दिया, उसकी डॉक्यूमेंट्री बनेगी। उस विभाग में कार्यरत लोगों और उनके परिजनों को दिखाई जाएगी।

हरियाणा सीएम का घर और दफ्तर उड़ाने की धमकी

हरियाणा (एजेंसी)। हरियाणा में शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास और सचिवालय को बम से उड़ाने की धमकी मिली। चंडीगढ़ स्थित मुख्यमंत्री आवास संत कबीर कुटीर और सचिवालय में फिदायीन हमले की बात कही गई। सूत्रों के मुताबिक सीआईडी के सीनियर अधिकारियों को मेल भेजकर कहा गया कि दोनों जगह फिदायीन हमले होंगे। सूचना मिलते ही चंडीगढ़ पुलिस की टीमें एक्टिव हो गईं। तुरंत सीएम आवास और सचिवालय की सुरक्षा बढ़ा दी गई।सचिवालय में अनाउंसमेंट कराकर बिल्डिंग खाली कराई गई। अधिकारियों ने कहा कि कोई भी कर्मचारी किसी भी फ्लोर पर न रहे। बिल्डिंग और आसपास के इलाके में बम और डॉग स्क्वायड बुलाकर सर्च ऑपरेशन चलाया गया।

ओडिशा में इंजीनियर के घर से 2 करोड़ कैश बरामद

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा में विजिलेंस डिपार्टमेंट ने शुक्रवार को एक चीफ इंजीनियर के 7 ठिकानों पर रेड की। इस दौरान उसके दो घरों से 2 करोड़ से ज्यादा कैश बरामद हुआ। लाखों रुपए के सोने के गहने और महंगे कपड़े भी मिले हैं। विजिलेंस टीम को देखते ही चीफ इंजीनियर भुवनेश्वर स्थित अपने फ्लैट की खिड़की से 500 रुपए के नोटों के बंडल फेंकने लगा था।

अधिकारियों ने नोटों की गड्डी बरामद कर ली है। कैश गिनने के लिए मशीनों का सहारा लेना पड़ रहा है। नोटों की गिनती जारी है। इंजीनियर की पहचान ओडिशा सरकार के कर्मचारी बैकुंठ नाथ सारंगी के रूप में हुई है। वह राज्य के ग्रामीण विकास विभाग में काम करता है। उसके पास आय से ज्यादा संपत्ति होने का पता चला था। फ्लैट और पैतृक आवास से 1-1 करोड़ कैश मिला आधिकारिक बयान में बताया गया कि ओडिशा पुलिस की एंटी करप्शन विंग ने भुवनेश्वर, अंगुल और पुरी में चीफ इंजीनियर के ठिकानों पर पर छापा मारा।

पंजाब में अवैध पटाखा फैक्ट्री में धमाका, 5 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब के मुक्तसर में गुरुवार देर रात एक पटाखा फैक्ट्री में धमाका हो गया। 5 वर्कर्रों की मौत हो गई। मलबे से 29 लोगों को निकाला गया है। बचाव एवं राहत कार्य जारी है। घायलों को बठिंडा एम्स और बादल सिविल अस्पताल भेजा गया है। फैक्ट्री में कुल 40 लोग काम करते थे। घायल वर्कर उत्तर प्रदेश के बताए जा रहे हैं। मृतकों में अभी तक केवल एक 25 वर्षीय राहुल निवासी अलीगढ़, उत्तर प्रदेश की ही पहचान हो पाई है। बादल सरकारी अस्पताल में भर्ती घायलों में गणेश (25), मोहित (23), अमित (26) अमित (21), अंकित (20), अक्षय (22), बहादुर (25), मनोज (23) और पिंटू (21) शामिल है। इसके अलावा बठिंडा अस्पताल में सोनू (21), रोहित (20), विकास (21), संजय (23), भोला (25), मुकेश (32) को भर्ती कराया गया है।

भाजपा बोली-देश भर में घर-घर सिंदूर पहुंचाने का भाजपा का कोई कार्यक्रम नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत घर-घर सिंदूर पहुंचाने की खबर को भाजपा ने गलत बताया है। दैनिक भास्कर ने 28 मई के अंक में घर-घर सिंदूर पहुंचाएगी भाजपा, 9 जून से शुरुआत, शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया था। इस खबर में लिखा गया था कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को जन-जन तक पहुंचाने की तैयारी के तहत भाजपा महिलाओं को सिंदूर बांटेगी। समाचार में भाजपा के आउटरीच प्रोग्राम के तहत किए जाने वाले अन्य कार्यक्रमों की भी विस्तृत जानकारी दी गई थी। भाजपा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर 30 मई को लिखा कि दैनिक भास्कर में छपी यह खबर गलत है। भारतीय जनता पार्टी ने घर-घर सिंदूर बांटने का कोई कार्यक्रम निर्धारित नहीं किया है। उधर, भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने सिंदूर बांटने की खबर को आधारहीन बताया। उन्होंने कहा, ममता बनर्जी को अपने प्रदेश की बदहाली की चिंता करनी चाहिए, और देश की सुरक्षा जैसे संवेदनशील मुद्दों पर बेतुकी बयानबाज़ी नहीं करनी चाहिए। पश्चिम बंगाल संप्रदायिकता की आग में जल रहा है, महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं, बेरोज़गारों के पास रोज़गार नहीं है-ये ममता बनर्जी की प्राथमिकताएं होनी चाहिए।

इस बीच, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. संबित पात्रा ने सिंदूर को लेकर पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के गुरुवार के बयान को अत्यंत निंदनीय करार दिया है। एक प्रेस कांन्फ्रेंस में पात्रा ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बारे ममता बनर्जी के कथन पर वह कोई टिप्पणी नहीं करेंगे, क्योंकि यह बयान खुद में ही शर्मनाक है। प्रधानमंत्री सबके सेवक हैं, किसी के पिता तुल्य हैं, किसी के भाई हैं। इसमें भी कोई संदेह नहीं कि घुसपैठियों, रोहिंग्याओं और बांग्लादेशी घुसपैठियों को शरण देने का सबसे बड़ा काम अगर किसी ने किया है तो वह ममता बनर्जी ने किया है। उन सभी घुसपैठियों की चहेती अगर कोई नेता हैं, तो वह ममता ही हैं।

देश में कोरोना के 1828 एक्टिव केस,15 मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना वायरस के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। एक्टिव केसेज की संख्या शुक्रवार को 1828 पहुंच गई।

गुजराज के अहमदाबाद में एक दिन के नवजात की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। बच्चे को आईसीयू में रखा गया है। पिछले सप्ताह बच्चे की मां भी कोरोना पॉजिटिव पाई गई थी, हालांकि अब उनकी रिपोर्ट निगेटिव है। इसके अलावा 8 महीने की एक बच्ची गुरुवार से ऑक्सीजन सपोर्ट पर है। वहीं, देश में कोरोना से जान गंवाने वालों का आंकड़ा 15 हो गई है, इनमें सबसे ज्यादा 6 मौतें महाराष्ट्र में हैं। राज्य सरकार कोरोना वायरस के लिए इन्फ्लुएंजा और सांस से जुड़ी बीमारियों पर सर्वे करा रही है। उधर केरल में एक्टिव मामले 727 हो गए हैं। मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने बताया कि राज्य में ओमिक्रॉन जेएन वैरिएंट एलएफ 7 के मामले आ रहे हैं। है। केंद्रीय मंत्री प्रतापराव जाधव ने कहा है कि स्वास्थ्य विभाग और आयुष मंत्रालय पूरी तरह सतर्क हैं और हालात

पर लगातार नजर रखे हुए हैं।

महाराष्ट्र में 9 हजार से ज्यादा कोविड टेस्ट महाराष्ट्र सरकार ने बताया कि गुरुवार को कोविड के 79 नए मामले सामने आए। जबकि मुंबई में जनवरी 2025 से अब तक कुल 379 केस मिले हैं। जनवरी और फरवरी में एक-एक, अप्रैल में चार और मई में 373 मरीज मिले। जनवरी से अब तक राज्य में 9592 कोविड-19 टेस्ट किए गए। वहीं, जम्मू-कश्मीर में गुरुवार को कोविड-19 के दो मामले सामने आए थे। दोनों केरल के रहने वाले हैं और श्रीनगर के गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज में पढ़ाई कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

सात्विक और चिराग सिंगापुर ओपन के [ार्टर फाइनल में, सिंधू और प्रणय बाहर

नई दिल्ली एजेंसी। सिंगापुर ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट में सात्विक साईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया है। लेकिन दूसरी तरफ पीवी सिंधू और एचएस प्रणॉय हार के साथ टूर्नामेंट से बाहर हो गए। सात्विक और चिराग ने दूसरे दौर में साबर कार्यमन गुटामा और मोह रेजा पहलवी इस्फहानी की सातवीं वरीयता प्राप्त इंडोनेशियाई जोड़ी के खिलाफ पहला गेम गंवाने के बाद वापसी करते हुए जीत हासिल की। सात्विक साईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय पुरुष युगल टीम ने गुरुवार को सिंगापुर ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया लेकिन पूर्व विश्व चैंपियन पीवी सिंधू हार के साथ टूर्नामेंट से बाहर हो गईं। सात्विक और चिराग ने दूसरे दौर के मुकाबले में साबर कार्यमन गुटामा और मोह रेजा पहलवी इस्फहानी की सातवीं वरीयता प्राप्त इंडोनेशियाई जोड़ी के खिलाफ पहला गेम गंवाने के बाद वापसी करते हुए एक घंटे 14 मिनट तक में 19-21 21-16 21-19 से जीत हासिल की। अगले दौर में भारतीय जोड़ी का सामना गोह से फेई और नूर इज्जुद्दीन की दूसरी वरीयता प्राप्त मलेशियाई जोड़ी से होगा। पिछले कुछ हफ्तों से फिटनेस समस्याओं से जूझने के बाद वापसी कर रही भारतीय जोड़ी ने शानदार प्रदर्शन किया। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधू को हालांकि दुनिया की पांचवें नंबर की खिलाड़ी चीन की चेन यूफेई के खिलाफ 65 मिनट चले कड़े मुकाबले में 9-21 21-18 16-21 से हार का सामना करना पड़ा। विश्व रैंकिंग में 17वें स्थान पर खिसक चुकी सिंधू ने दूसरे गेम में अपनी पुरानी फॉर्म दिखाई। उन्होंने 19-12 की बढ़त बनाने के बाद दूसरा गेम 21-18 से जीता। हालांकि तीसरे और निर्णायक गेम में चीन की खिलाड़ी ने अपने दमदार स्मैश और कोर्ट पर बेहतर नियंत्रण बनाते हुए मैच जीत लिया। पहले दौर में कनाडा की वेन यू झेंग के खिलाफ 21-14, 21-9 से जीत दर्ज करने वाली सिंधू दूसरे दौर में इस लय को बरकरार रखने में नाकाम रहीं। पुरुष एकल में भी भारत को निराशा हाथ लगी जब एचएस प्रणय प्री क्वार्टर फाइनल में फ्रांस के क्रिस्टो पोपोव के खिलाफ 16-21 14-21 से हारकर बाहर हो गए। भारत की त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीचंद की आठवीं वरीयता प्राप्त जोड़ी को महिला युगल के दूसरे दौर में चीन की जिया यि फान और झांग शु जियान की जोड़ी से 8-21, 10-21 से शिकस्त का सामना करना पड़ा। वहीं रोहन कपूर और रूत्विका शिवानी गाडे की मिश्रित युगल जोड़ी भी हारकर बाहर हो गई जिन्हें हांगकांग की टांग चुन मान और से यिंग सुएत की जोड़ी ने 31 मिनट में 21-10, 21-16 से पराजित किया।

हते के आखिरी दिन कमजोर रहा शेयर बाजार

सेंसे स 140 अंक टूटा; नि टी 24800 के नीचे, आईटी स्टॉ स में गिरावट

मुंबई (एजेंसी)। एशियाई बाजारों में गिरावट की वजह से भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन गिरावट के साथ खुले। अमेरिका की अपीलीय अदालत ने गुरुवार को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लगाए गए सबसे बड़े टैरिफ को अस्थायी रूप से फिर से लागू कर दिया है। इससे आईटी स्टॉक्स में गिरावट देखने को मिला और बाजार नीचे की तरफ फिसल गया। चौथी तिमाही के जीडीपी के आंकड़े, कंपनियों के मार्च तिमाही के नतीजे, ट्रम्प टैरिफ की बहाली, विदेशी निवेशकों की गतिविधि, विदेशी मुद्रा डेटा और मिश्रित वैश्विक संकेत सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी की चाल तय करेंगे।

इससे पहले गुरुवार को भारतीय शेयर बाजार उतार-चढ़ाव वाले कारोबार में चढ़कर बंद हुए। बीएसई सेंसेक्स 320.70 अंक की बढ़त लेकर 81,633.02 पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंजका निफ्टी-50 81.15 अंक की मजबूती के साथ 24,833.60 पर बंद हुआ। एशियाई बाजार- एशियाई बाजारों में शुक्रवार को गिरावट आई। धीमी होती अमेरिकी अर्थव्यवस्था, लगातार मुद्रास्फीति की आशंका और अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के रेसिप्रोकल' टैरिफ को लेकर कानूनी अनिश्चितता ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। निक्केई में 1.48 प्रतिशत की गिरावट आई। जबकि ब्रोडर टॉपिक्स इंडेक्स में 0.8 प्रतिशत की गिरावट आई। दक्षिण कोरिया के कोस्पी में 0.18 प्रतिशत की गिरावट आई और एएसएक्स 200 में 0.19 प्रतिशत की गिरावट आई। अमेरिकी बाजार- अमेरिका में गुरुवार को सभी तीन प्रमुख इंडेक्स हाई स्तर पर बंद हुए। टेक्नीकल स्टॉक्स विशेष रूप से एनवीडिया में लाभ से अमेरिकी बाजारों में तेजी आई।

हालांकि, कोर्ट के फैसलों को लेकर अनिश्चितता ने तेजी को सीमित कर दिया। एसएंडपी 500 इंट्राडे में 0.9 प्रतिशत की वृद्धि के बाद 0.4 प्रतिशत चढ़ा। नैस्डैक कंपोजिट में 0.39 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो सत्र के उच्चतम 1.5 प्रतिशत लाभ से पीछे हट गया। डॉव जोन्स में 0.28 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

सोने का भाव 95,700 और चांदी लगभग 97,200 रुपए किलो

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोने-चांदी के वायदा भाव शुक्रवार को शुरुआत में नरमी के साथ कारोबार कर रहे हैं। दोनों के वायदा भाव शुक्रवार को गिरावट के साथ खुले। घरेलू बाजार में आज सोने के भाव 95,700 रुपये, जबकि चांदी के भाव 97,200 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना-चांदी सुस्ती के साथ कारोबार कर रहे हैं। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क जून कॉन्ट्रेक्ट 660 रुपये की गिरावट के साथ 95,799 रुपये के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 96,459 रुपये था। इस समय यह 729 रुपये की गिरावट के साथ 95,730 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत सुस्त रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क मई कॉन्ट्रेक्ट 574 रुपये की गिरावट के साथ 97,252 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 97,826 रुपये था। इस समय यह 606 रुपये की गिरावट के साथ 97,220 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में आज सोने चांदी के वायदा भाव में नरमी देखने को मिल रही है। कॉमेक्स पर सोना 3,315.10 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 3,317.10 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 18.29 डॉलर की गिरावट के साथ 3,299.20 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव पिछले महीने 3,509.90 डॉलर के भाव पर ऑल टाइम हाई पर पहुंच गए थे। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 33.45 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 33.42 डॉलर था। इस समय यह 0.21 डॉलर की गिरावट के साथ 33.21 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

रुपया गुरुवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 85.48 पर बंद हुआ

रुपया 19 पैसे मजबूत होकर 85.29 डॉलर पर

मुंबई (एजेंसी)। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट और विदेशी पूंजी प्रवाह जारी रहने से रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में 19 पैसे मजबूत होकर 85.29 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 85.35 प्रति डॉलर पर खुला। फिर शुरुआती कारोबार में डॉलर के मुकाबले 85.29 पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव से 19 पैसे की बढ़त दर्शाता है। रुपया गुरुवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 85.48 पर बंद हुआ।

इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.16 प्रतिशत की बढ़त के साथ 99.36 पर रहा।

धोनी का ये रिकार्ड अब तक नहीं तोड़ पाया है कोई विकेटकीपर बल्लेबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के नाम एक ऐसा रिकार्ड है जिसे पिछले दो दशक के बाद भी कोई विकेटकीपर बल्लेबाज नहीं तोड़ पाया है। ये विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर सबसे बड़ी पारी खेलने का रिकार्ड है। धोनी ने रिकार्ड श्रीलंका के खिलाफ 2005 में बनाया था। तब जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में धोनी ने 145 गेंदों पर 15 चौके और 10 छक्के लगाकर नाबाद 183 रन बनाए थे। यहां तक कि दक्षिण अफ्रीका के क्विंटन डि कॉक और ऑस्ट्रेलिया के एडम गिलक्रिस्ट भी ऐसा रिकार्ड नहीं बना पाये हैं। इस पारी के साथ धोनी ने एकदिवसीय में विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर बनाया था। उस पारी के साथ ही धोनी ने गिलक्रिस्ट का सबसे अधिक रनों का रिकॉर्ड तोड़ा था, गिलक्रिस्ट ने जनवरी 2004 में होबार्ट के बेलरिव ओवल में जिम्बाब्वे के खिलाफ 126 गेंदों पर 13 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 172 रन बनाए थे। धोनी का रिकॉर्ड आज 20 साल बाद भी बना हुआ है। वहीं दक्षिण अफ्रीका के डी कॉक ने साल 2023 में मुंबई में बांग्लादेश के खिलाफ 174 और 2016 में सेंचुरियन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 178 रन की पारी खेली थी पर वह धोनी का रिकार्ड नहीं तोड़ पाये थे। इसके अलावा उन्होंने अक्टूबर 2017 में किम्बर्ले में बांग्लादेश के खिलाफ नाबाद 168 रन भी बनाए थे। वहीं मार्च 2020 में बांग्लादेश के विकेटकीपर बल्लेबाज लिटन दास ने जिम्बाब्वे के खिलाफ 143 गेंदों पर 176 रन बनाये थे। धोनी ने 183 रनों की पारी के साथ लक्ष्य का पीछा करते हुए सबसे अधिक स्कोर का भी रिकार्ड बनाया था हालांकि ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर शेन वॉटसन ने 2011 विश्व कप मैच में बांग्लादेश के खिलाफ 96 गेंदों पर नाबाद 185 रन बनाकर ये रिकॉर्ड तोड़ दिया था।

कप्तानी के पहले ही वर्ष में टीम को आईपीएल फाइनल में पहुंचाने वाले पांचवें भारतीय बने रजत

नई दिल्ली (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के कप्तान रजत पाटीदार आईपीएल 2025 के पहले क्वालीफायर में पंजाब किंग्स पर जीत के साथ ही एक ऐसे क्लब में शामिल हो गये हैं जिसमें महेंद्र सिंह धोनी, रोहित शर्मा, अनिल कुंबले और हार्दिक पांड्य जैसे दिग्गज शामिल हैं। इसी के साथ ही अपनी कप्तानी के पहले ही वर्ष में टीम को आईपीएल फाइनल में पहुंचाने वाले रजत 5वें भारतीय कप्तान बने हैं। आईपीएल 2025 का फाइनल 3 जून को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। आरसीबी कुल मिलाकर चौथी बार आईपीएल के फाइनल में पहुंची है। हालांकि, इससे पहले के तीनों मौकों पर उसे फाइनल में हार झेलनी पड़ी थी। इस बार आरसीबी आईपीएल में खिताब जीतने का पूरा प्रयास करेगी। आईपीएल के फाइनल में आरसीबी की कप्तानी साल 2009 में अनिल कुंबले जबकि साल 2011 में डेनियल वेटोरी , वहीं साल 2016 में विराट कोहली और 2025 में रजत पाटीदार ने की थी।

धोनी ने अपनी कप्तानी के पहले ही साल में चेन्नई सुपरकिंग्स टीम को फाइनल में पहुंचाया था। उन्होंने 2008 में आईपीएल के पहले ही सत्र में ये उपलब्धि हासिल की थी पर वह खिताब नहीं जिता पाये थे। अनिल कुंबले दूसरे ऐसे भारतीय हैं जिनकी कप्तानी के पहले ही साल 2009 में में टीम आईपीएल फाइनल में पहुंची थी हालांकि टीम फाइनल नहीं जीत पायी थी। साल 2013 में रोहित शर्मा मुंबई इंडियंस के कप्तान बने और उसी वर्ष उन्होंने टीम को आईपीएल फाइनल में पहुंचाया। साल 2022 में हार्दिक पांड्या गुजरात टाइटंस के कप्तान बने। उनकी कप्तानी के पहले ही वर्ष में गुजरात टाइटंस आईपीएल फाइनल में पहुंचने में सफल हुई थी।

जीत के साथ बेंगलुरु फाइनल में, पंजाब को एक और मौका

हेजलवुड, शर्मा की घातक गेंदबाजी के बाद फिलिप का विस्फोटक अर्धशतक

चंडीगढ़ (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के पहले क्वालीफायर में धमाकेदार जीत दर्ज करते हुए रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 9 साल बाद फाइनल में दस्तक दी है। पहले बल्लेबाजी करते हुए पंजाब किंग्स की टीम 14.1 ओवर में 101 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। जिसके जवाब में बेंगलुरु ने 10 ओवर में दो विकेट खोकर 106 रन बनाए और 8 विकेट से विशाल जीत हासिल की। टॉस जीतकर बेंगलुरु ने पंजाब को बल्लेबाजी का आमंत्रण दिया लेकिन पंजाब की टीम बड़ा स्कोर नहीं खड़ा कर पाई। पंजाब के बल्लेबाज लगातार आउट होते रहे। मार्क स्टोइनिश ने सबसे ज्यादा 26 रन बनाए। बेंगलुरु की तरफ से जोश हेजलवुड ने तीन और सुयश शर्मा ने तीन विकेट लिए यश दयाल को दो विकेट मिले। कुणाल पांड्या और भुवनेश्वर कुमार ने एक-एक विकेट लिए। पंजाब की टीम 14.1 ओवर में 101 रन ही बना सकी। 102 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बेंगलुरु ने धमाकेदार शुरुआत की। विराट कोहली 12 रन बनाकर आउट हुए। वहीं मयंक अग्रवाल 19 रन बनाकर आउट हुए। लेकिन इसके बाद पंजाब को कोई विकेट नहीं मिला फिलिप साल्ट ने 27 गेंद में छह चौके और तीन छक्के की सहायता से 56 रन बनाए। रजत पाटीदार ने 8 गेंद में एक चौका और एक छक्के की सहायता से 15 रन बनाए और दोनों बल्लेबाज नाबाद रहे। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 8 विकेट से मैच जीत लिया इस जीत के साथ ही बेंगलुरु सीधे फाइनल में पहुंच गया है, जबकि पंजाब को मुंबई और गुजरात के विजेता के साथ खेलने का एक मौका और मिलेगा।

संजय मांजरेकर टीम चयन से खुश नहीं

कहा- सरफराज को बनाय गया निशाना

मुम्बई (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर इंग्लैंड दौरे के लिए चयनित भारतीय टेस्ट टीम से संतुष्ट नहीं हैं। मांजरेकर के अनुसार चयनकर्ताओं ने प्रदर्शन नहीं अपनी सोच के आधार पर खिलाड़ियों को रखा है। मांजरेकर ने कहा कि किसी भी खिलाड़ी के प्रदर्शन को लेकर पहले से अनुमान लगा लिया गया है। चयन समिति की सोच यह है कि हालातों और विपक्ष के आधार पर खिलाड़ियों की संभावित सफलता और असफलता तय की जाये। ऐसे में सरफराज खान जैसे खिलाड़ी को नुकसान हुआ शिकार हुए, क्योंकि उन्हें ऑस्ट्रेलिया में एक भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला और उनका प्रदर्शन देखने का अवसर चयनकर्ताओं को नहीं मिला। मांजरेकर ने कहा कि घरेलू क्रिकेट में जबरदस्त प्रदर्शन के बाद भी सरफराज को टीम में जगह क्यों नहीं मिली ये उनकी समझ में नहीं आया है।

उन्होंने कहा कि सरफराज ने अपने 4 टेस्ट में घरेलू मैदान पर तीन अर्धशतक और एक 150 रन की पारी और इसके बाद केवल 4 पारियों में वह असफल रहे। फिर भी सरफराज को ऑस्ट्रेलिया में एक भी मैच नहीं मिला। इंग्लैंड दौरे के लिए भी हाल के प्रदर्शन में करुण नायर से उनका प्रदर्शन अच्छा रहा है। इसके बाद भी करुण को शामिल किया गया है। मांजरेकर ने आगे कहा कि यह गैर-चयन प्रदर्शन के बारे में नहीं है, बल्कि नेतृत्व समूह में किसी अहम व्यक्ति की सोच है कि सरफराज इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया में रन नहीं बना पाएंगे, जबकि करुण ऐसा कर सकते है। करुण फॉर्म में हैं और वे घरेलू क्रिकेट में हर प्रारूप में लगातार रन बना रहे हैं। नायर ने विदर्भ के लिए रणजी ट्रॉफी में नौ मैचों में 863 रन बनाए। करुण ने विजय हजारे ट्रॉफी में भी 779 रन बनाए, और उनके लगातार अच्छे प्रदर्शन के कारण उन्हें दिल्ली कैपिटल्स के लिए आईपीएल में खेलने का मौका मिला, जहां उन्होंने सीजन के पहले मैच में 89 रन बनाए। दूसरी ओर सरफराज खान ने इंग्लैंड दौरे से पहले कड़ी मेहनत की और पिछले 2 महीनों में 10 किलो वजन कम किया, साथ ही अपनी फिटनेस पर काम किया। हालांकि, चोट के कारण सरफराज हाल के समय में ज्यादा क्रिकेट नहीं खेल पाए। सरफराज को हालांकि इंग्लैंड दौरे के लिए भारत ए टीम में शामिल किया गया है। यदि सरफराज इंग्लैंड लायंस के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तो उनके बाद में मुख्य टीम में शामिल होने की संभावना बन सकती है।

रविन्द्र जडेजा भी बनना चाहते हैं भारतीय टीम का कप्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुभमन गिल के इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टीम का कप्तान बनने के बाद अब ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा के मन में भी कप्तान बनने की इच्छा जोर मारने लगी है। जडेजा का कहना है कि वह भी भारतीय टेस्ट टीम की कप्तानी करना चाहते हैं। जडेजा के अनुसार उन्होंने कई कप्तानों के साथ काम किया है इसलिए वह जानते हैं कि कप्तानी कैसे की जाती है। क्या वह भारत के टेस्ट कप्तान बनना चाहते हैं , यह पूछे जाने पर जडेजा ने कहा, हां , बिल्कुल। इतने सालों में मैंने अलग अलग कप्तानों के साथ खेला है। मुझे हर कप्तान की शैली के बारे में पता है और यह भी समझता हूं कि खिलाड़ी क्या सोचते हैं और चाहते हैं।'' जडेजा ने महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में तीनों प्रारूपों में पदार्पण किया था और आईपीएल में भी उनकी कप्तानी में वह चेन्नई सुपर किंग्स की ओर से खेले हैं। जडेजा ने कहा ,''हर कप्तान की अपनी शैली होती है। मैने हर प्रारूप में महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में खेला है पर उनकी सोच बिल्कुल आसान है। अगर उन्हें लगता है कि कोई बल्लेबाज एक ही जगह पर शॉट खेल सकता है तो वहां वह फील्डर जरूर लगायेंगे।'' टेस्ट क्रिकेट से रोहित शर्मा के संन्यास के बाद अश्विन ने जडेजा को कप्तान बनाने का समर्थन किया था। उन्होंने तब कहा था ,' हम जडेजा को क्यो भूल जाते हैं। अगर नया कप्तान चाहिये तो मैं कहूंगा कि दो साल के लिए किसी अनुभवी को कमान सौंपने के बाद नये व्यक्ति को बागडोर दी जानी चाहिए।'' जडेजा ने यह भी कहा कि टेस्ट टीम की बजाय टी20 में कप्तानी अधिक मुश्किल है। उन्होंने कहा ,'' टेस्ट क्रिकेट में आपको गेंदबाज की जरूरत के मुताबिक दो या तीन फील्डर में बदलाव करना होता है, बल्लेबाज के हिसाब से नहीं।'' उन्होंने कहा ,'' टेस्ट क्रिकेट में कप्तानी अलग है। इसमें ज्यादा दिमाग नहीं लगाना पड़ता है।''

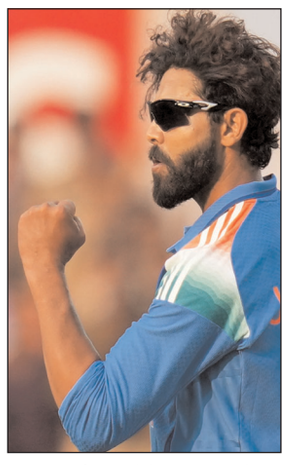

शार्दुल ठाकुर बोले, शुभमन और ऋषभ के स्वभाव में हैं काफी अंतर

मुम्बई (एजेंसी)। ऑराउंडर शार्दुल ठाकुर ने कहा है कि इंग्लैंड दौर के लिए नये कप्तान बनाये गये शुभमन गिल और उप-कप्तान ऋषभ पंत के स्वभाव में काफी अंतर है। शार्दुल के अनुसार जहां शुभमन गंभीर हैं, वहीं ऋषभ मजाकिया स्वभाव वाले हैं। साथ ही कहा है कि इन दोनो ने सबसे बड़े और अहम अवसर मौकों पर खेल में योगदान दिया है, और इसी लिए इनसे टीम को काफी उम्मीदें हैं। ठाकुर के अलावा इंग्लैंड के पूर्व कप्तान इयोन मॉर्गन ने भी शुभमन को स्वाभाविक नेतृत्व कर्ता करार दिया, जो कोलकाता नाइट राइडर्स में उनके साथ समय के आधार पर जिम्मेदारी लेने में कुशल है। वहीं पूर्व चयनकर्ता एमएसके प्रसाद ने बुमराह को कप्तानी के लिए समर्थन दिया था जबकि वसीम जफर ने सुझाव दिया था कि बुमराह कप्तान हों और गिल उप-कप्तान बनकर भविष्य के लिए तैयार हों। दूसरी ओर वीरेंद्र सहवाग ने तर्क दिया कि ऋषभ पंत गिल से बेहतर विकल्प थे और गिल को तीसरा सबसे अच्छा विकल्प माना। इनके विपरित गिल को चुनकर मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने कहा कि गिल का चयन एक दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है, न कि केवल एक सीरीज के लिए। आप कप्तानों को एक या दो दौरे के लिए नहीं चुनते। भारत और इंग्लैंड के बीच आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 चक्र का हिस्सा वाली पांच मैचों की यह सीरीज हेडिंग्ले, एजबेस्टन, लॉर्ड्स, ओल्ड ट्रैफर्ड और द ओवल जैसे मैदानों पर खेली जाएगी। इस इंग्लैंड दौरे के लिए चुनी गई टीम में शार्दुल भी शामिल हैं। मो शमी के नहीं होने से उन्हें इस सीरीज में गेंदबाजी में भी बड़ी भूमिका मिलेगी।

आईपीएल में नजर आये कई उतार चढ़ाव, युवा कप्तान सफल हुए

खोज साबित हुए वैभव, आयुष जैसे खिलाड़ी

मुम्बई (एजेंसी) आईपीएल के इस सत्र में कई उतार-चढ़ाव आये। जहां पांच बार की खिताब विजेता चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) और तफानी बल्लेबाजी के लिए जानी जानी वाली सनराइजर्स हैदराबाद असफल रही। वहीं पंजाब किंग्स, गुजरात टाइटंस जैसे टीमों ने अच्छा प्रदर्शन किया। इसे अलावा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) व मुम्बई इंडियंस का प्रदर्शन भी ठीक रहा जबकि धमाकेदार शुरुआत के बाद भी दिल्ली कैपिटल्स असफल रही। राजस्थान रॉयल का प्रदर्शन भी खराब रहा। लीग में 14 साल के वैभव सूर्यवंशी वह 17 साल के आयुष महात्रे नई खोज साबित हुए। इस दोनो ने ही अपनी बल्लेबाजी से सभी को हैरान कर दिया। सत्र में अक्षर पटेल और श्रेयस अय्यर के साथ शुभमन गिल ने नई सोच को प्रशंसकों के सामने रखा जबकि पुराने कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी और पैट कमिंस पूरी तरह से संघर्ष करते दिखे। लीग के अब तक के सबसे महंगे खिलाड़ी ऋषभ पंत विफल रहे। वह अंतिम लीग मुकाबले में हालांकि शतक लगाने में सफल रहे।

अक्षर पटेल की दिल्ली कैपिटल्स अच्छी शुरूआत के बाद पटरी से उतरी गयी। पूर्व विजेता चेन्नई सुपर किंग्स, राजस्थान रॉयल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स का बेहद खराब रहा और सनराइजर्स हैदराबाद ने पूरे टूर्नामेंट में खराब प्रदर्शन किया. रॉयल्स के वैभव जब पिछले दिसंबर में 'मेगा नीलामी' में चुने गए थे तो उनकी उम्र 13 साल थी और मई में 14 साल की उम्र में वह गुजरात टाइटन्स के खिलाफ 35 गेंद पर आईपीएल में सबसे तेज शतक और अब तक दूसरा सबसे तेज शतक लगाने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय खिलाड़ी बन गए। उन्होंने अपने शानदार स्ट्रोक प्ले और जोश से खेल के दिग्गजों का दिल जीत लिया। इस सूची में पंजाब किंग्स के 'अनकैप्ड' प्रियांश आर्य भी शामिल थे जिन्होंने अपना पहला आईपीएल शतक लगाया। प्रभसिमरन सिंह ने भी दिखाया कि उनमें दम है जबकि आयुष म्हात्रे ने अपने प्रदर्शन से चेन्नई सुपर किंग्स की उम्मीदें जगायीं। युवा सुदर्शन ने दिखाया कि जोखिम लिए बिना भी रन जुटाए जा सकते हैं। पिछले साल की उपविजेता एसआरएच सबसे खतरनाक बल्लेबाजी लाइन-अप के साथ उतरी थी लेकिन उसका आक्रामक रवैया पूरी तरह विफल रहा। युव ऑलराउंडरन नितीश कुमार रेड्डी ने काफी हद तक निराश किया और पावरप्ले में गेंदबाजी करने के लिए एक बेहतरीन स्पिनर नहीं होने से उन्हें नुकसान हुआ। सीएसके ने इस साल सबक सीखा क्योंकि उसे युवा प्रतिभाओं को बेंच पर रखने और सिर्फ धोनी जैसे अनुभवी खिलाड़ियों पर निर्भर रहने की अपनी रणनीति को छोड़ना पड़ा। संजू सैमसन की फिटनेस और अन्य खिलाड़ियों में जज्बे की कमी के कारण टीम निचले स्थान पर रही सीएसके से ऊपर रह। केकेआर के कप्तान अजिंक्य रहाणे अकेले दम पर जमे रहे, लेकिन फ्रेंचाइजी के सबसे महंगे खिलाड़ी और उप-कप्तान वेंकटेश अय्यर के लिए सत्र काफी खराब रहा।

कलेक्ट्रेट में आयोजित बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने दिये निर्देश

अज्ञात वाहन से दुर्घटना के पीड़ितों के प्रकरण तत्काल प्रस्तुत करें, उप पुलिस अधीक्षक दर्ज कराएं प्रकरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने अज्ञात वाहन से दुर्घटना के पीड़ितों को तत्काल सहायता राशि उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा है कि अज्ञात वाहन से दुर्घटना होने पर मोटरयान अधिनियम के संशोधित प्रावधानों के अनुसार मृत व्यक्ति के परिजनों को दो लाख रुपए की सहायता राशि दी जाती है। गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को 50 हजार रुपए तक की सहायता का प्रावधान है। उप पुलिस अधीक्षक यातायात सभी थाना प्रभारियों से अज्ञात वाहन के दुर्घटना के सभी प्रकरण की जानकारी अनुविभागीय समिति में दर्ज कराएं। सभी एसडीएम अधिनियम के प्रावधानों के तहत समस्त अभिलेखों के साथ सहायता राशि के लिए प्रकरण कलेक्ट्रेट कार्यालय को प्रस्तुत करें। राहत शाखा के प्रभारी अधिकारी सात दिवस में सभी प्रकरण पूरे विवरण के साथ ऑनलाइन पोर्टल पर दर्ज करा दें। प्रकरण के साथ एफआईआर की कॉपी, पीड़ित के आश्रितों के बैंक खाता संख्या, मृत व्यक्ति के पोस्टमार्टम की रिपोर्ट सहित प्रकरण मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण में दर्ज करें।

कलेक्टर ने कहा कि राहवीर योजना के तहत सड़क दुर्घटना के एक घंटे के गोल्डन पीरियड में पीड़ित को अस्पताल पहुंचाने पर 25 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। इस योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार करें जिससे दुर्घटना पीडितों को तत्काल सहायता उपलब्ध कराने के लिए लोग आगे आएं। भारत सरकार की सड़क दुर्घटना पीड़ितों को कैशलेस उपचार योजना 2025 के तहत दुर्घटना पीड़ित को योजना में शामिल अस्पतालों में दुर्घटना से 7 दिन की अवधि तक एक लाख 25 हजार रुपए की सहायता निःशुल्क दी जाती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य दुर्घटना में गंभीर रुपए से घायल व्यक्ति को तत्काल उपचार सहायता उपलब्ध कराना है। स्वास्थ्य विभाग के प्रावधानों के अनुरूप योजना का लाभ पीड़ितों को दिया जाएगा। इस योजना का भी व्यापक प्रचार-प्रसार कराएं। बैठक में संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय ने योजना के प्रावधानों की जानकारी दी। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल तथा अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

अत्याचार पीड़ितों को तत्परता से सहायता राशि दें : बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज प्रकरणों में एफआईआर दर्ज होने के बाद थाना प्रभारी तत्काल प्रकरण जनजातीय कार्य विभाग को उपलब्ध कराएं। जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग सहायता राशि के प्रकरण तत्परता से निराकृत कर पीड़ितों को समय पर राहत राशि प्रदान करें। इसमें किसी भी तरह की लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। पीड़ितों के राहत राशि के प्रकरणों में मानवीयता और संवेदनशीलता से कार्यवाही करें। कलेक्टर ने कहा कि अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत सलाहकार समिति की प्रत्येक त्रैमास में बैठक अनिवार्य रूप से आयोजित कराएं। राहत राशि के प्रकरण हर सप्ताह प्रस्तुत करें। पीड़ितों को शिक्षा, स्वरोजगार, विवाह सहायता तथा अधिनियम के प्रावधानों के तहत मिलने वाली हर संभव सहायता देने का प्रयास करें। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल ने बताया कि सहायता राशि के एक भी प्रकरण पुलिस थानों में लंबित नहीं हैं। अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज होते ही उसे जनजातीय कार्य विभाग को प्रस्तुत किया जाता है। बैठक में अनुसूचित जनजाति के 22 तथा अनुसूचित जाति के 12 पीड़ितों के राहत प्रकरणों को मंजूरी दी गई। बैठक में संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग कमलेश्वर सिंह उपस्थित रहे।

शिक्षकों के लंबित स्वत्वों के भुगतान की कार्यवाही एक सप्ताह में पूर्ण करें - कलेक्टर

कलेक्टर प्रतिभा पाल ने शिक्षकों के सभी लंबित स्वत्वों के भुगतान की कार्यवाही एक सप्ताह में पूर्ण करने के निर्देश दिये हैं। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने क्रमोन्नति, डीए एरियर्स तथा वेतनमान के लंबित भुगतान एक सप्ताह में करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये। कलेक्टर ने वित्त विभाग के अधिकारियों के साथ शिक्षा विभाग के अधिकारियों को समन्वय बनाकर स्वत्वों के भुगतान सुनिश्चित कराने तथा पेंशन प्रकरण निराकृत करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने कहा कि सेवानिवृत्त शिक्षकों व कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण निराकृत करते हुए पीपीओ प्रदान करें। बैठक में कलेक्टर ने गंगेव के बीईओ तथा लेखा अधिकारी को अत्यधिक संख्या में काफी दिनों से लंबित प्रकरणों के कारण नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। इस अवसर पर संयुक्त संचालक कोष एवं लेखा एमएस पैकरा, जिला कोषालय अधिकारी पुष्पेन्द्र शुक्ला, जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता, सहायक संचालक राजेश मिश्रा सहित समस्त बीईओ उपस्थित रहे।

सतना एयरपोर्ट से पहली उड़ान में 6 आदिवासी महिलाएं करेंगी यात्रा

पीएम मोदी कल सतना एयरपोर्ट का वर्चुअल उद्घाटन करेंगे

द्वितीय विश्व युद्ध में बना था रनवे

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में हवाई सेवा की शुरुआत होने जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार (31 मई) को सतना एयरपोर्ट का वर्चुअल उद्घाटन करेंगे। इसी दिन यहां से पहली उड़ान भरेगी जाएगी, जिसमें छह आदिवासी महिलाएं सतना से रीवा तक यात्रा करेंगी।

एयरपोर्ट पर उद्घाटन समारोह की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। स्थानीय स्तर पर 1500 लोगों को समारोह में आमंत्रित किया गया है, जिसमें जिले की 1500 लाड़ली बहनें भी शामिल होंगी। शुक्रवार को सांसद गणेश सिंह ने एयरपोर्ट परिसर का निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

सतना एयरपोर्ट से फिलहाल 19 सीटर विमान उड़ान भरेंगे। इससे सतना के साथ-साथ आसपास के जिलें पन्ना, मैहर, चित्रकूट और सीधी के लोगों को सीधा लाभ मिलेगा। अब तक इन क्षेत्रों के यात्रियों को लंबी दूरी सड़क या रेल से तय करनी पड़ती थी, लेकिन अब वे तेज और सुलभ हवाई सेवा का लाभ ले सकेंगे। अनुमान है कि भोपाल, जबलपुर, सिंगरौली, खजुराहो और इंदौर तक की हवाई यात्रा करीब 5500 रुपए में संभव होगी।

आधुनिक सुविधाओं से लैस एयरपोर्ट: सतना एयरपोर्ट को सभी जरूरी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। यहां एयरपोर्ट सुरक्षा, एम्बुलेंस, मौसम विज्ञान केंद्र, इमरजेंसी एसेम्बली हॉल, कैंटीन पॉइंट और बैकअप पॉवर सिस्टम की व्यवस्था की गई है। रनवे की सुरक्षा के लिए सिक्योरिटी कॉटेज भी बनाया गया है, जहां बंदूकधारी सुरक्षाकर्मी तैनात रहेंगे। एयरपोर्ट पूरी तरह वातानुकूलित है और महानगरों के टर्मिनल जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

85 साल पुराना रनवे, अब बनेगा हब: सतना की यह हवाई पट्टी द्वितीय विश्व युद्ध के समय (1940 के दशक) में बनी थी। तब कभी-कभी फ्लाइट्स यहां उतरती थीं, लेकिन पहली बार नियमित वाणिज्यिक उड़ानों की शुरुआत हो रही है। एयरपोर्ट अथॉरिटी ने बताया कि रनवे और अन्य आधारभूत संरचनाओं का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और स्टाफ की नियुक्तियां भी कर दी गई हैं।

समारोह में ये शामिल रहेंगे: उद्घाटन समारोह में सांसद, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, उद्योगपति और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहेंगे। सभी वर्चुअली प्रधानमंत्री से जुड़कर कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे।

रीवा से पुणे के लिए शुरू होगी नई ट्रेन, रेल मंत्री ने की घोषणा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विंध्य क्षेत्र के लोगों के लिए एक और नई ट्रेन शुरू होने जा रही है। रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव ने रीवा से पुणे के बीच एक नई एक्सप्रेस ट्रेन शुरू करने की घोषणा की है। यह ट्रेन रीवा से चलकर जबलपुर होते हुए पुणे तक जाएगी, जिससे मध्यप्रदेश के उत्तर-पूर्वी हिस्से से महाराष्ट्र तक की लंबी दूरी अब ज्यादा सुविधाजनक और किफायती हो जाएगी। वर्तमान में रीवा से पुणे के लिए कोई सीधी रेल सेवा उपलब्ध नहीं है, जिससे यात्रियों को सतना, जबलपुर या कटनी जाकर ट्रेन पकड़नी पड़ती थी। इस नई ट्रेन के शुरू होने से अब रीवा से पुणे तक का सफर बिना ट्रेन बदले संभव होगा

बिजली बंद होने से परेशान लोगों ने कार्यालय में किया हंगामा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर में अमहिया स्थित विद्युत विभाग के कार्यालय में बीती रात हंगामे की स्थिति निर्मित हो गई। बिजली बंद होने की शिकायत लेकर पहुंचे उपभोक्ता उस समय आक्रोशित हो गए जब कर्मचारियों से उन्हें संतोषजनक जवाब नहीं मिला। जानकारी के मुताबिक करीब 2 घंटे तक बिजली बंद होने से परेशान उपभोक्ता विद्युत विभाग के कार्यालय पहुंच गए और बिजली बंद होने का कारण पूछने लगे। इसी बात को लेकर कर्मचारी और लोगों के बीच विवाद की स्थिति निर्मित हो गई। वहीं कर्मचारियों का कहना है कि भीड़ के द्वारा तोड़फोड़ की गई और हाथापाई की जा रही थी। तभी विभाग के कर्मचारी भी एकत्रित हो गए इस दौरान कुछ लोग गाड़ी छोड़कर वहां से भाग खड़े हुए। घटना की जानकारी मिलते ही अमहिया पुलिस भी मौके पर पहुंची। कर्मचारियों के द्वारा घटना की शिकायत थाने में दर्ज कराई गई है।

मैरिज गार्डन में हंगामा, बिना निमंत्रण पहुंचे 4 संदिग्ध, पर्स-जेवरात चोरी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के श्रद्धा मैरिज गार्डन में शुक्रवार देर रात चोरी का मामला सामने आया। परिवार ने बरहौं कार्यक्रम में बिना बुलाए पहुंचे चार लोगों पर संदेह जताया है, जिनमें से एक महिला को पुलिस ने हिरासत में लिया है। घटना के संबंध में माया शर्मा ने बताया कि उनके बेटे का बरहव संस्कार था। इस दौरान कमरे से 5 हजार रुपए नकद और चांदी के जेवरात गायब हो गए। बताया गया है कि गार्ड ने चार संदिग्ध व्यक्तियों की गतिविधियों की सूचना दी, गार्ड को देखते ही तीन लोग मौके से फरार हो गए। जबकि एक महिला को गार्ड ने भागने से रोक लिया। इसके बाद डायल 100 पुलिस ने मौके पर पहुंचकर संदिग्ध महिला को हिरासत में ले लिया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान में मिट्टी परीक्षण एवं नई कृषि तकनीकी पर वैज्ञानिकों का जोर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विकसित कृषि संकल्प अभियान का आरंभ 29 मई से हो चुका है। अभियान 12 जून तक संचालित होगा। इसका उद्देश्य किसानों को कृषि की वैज्ञानिक तकनीकों, नवाचारों और सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करके उनकी उत्पादकता और आय को बढ़ाना है। अभियान के तहत कृषि वैज्ञानिक दल गांवों में जाकर किसानों को नई कृषि तकनीकों का प्रशिक्षण देंगे। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत रीवा एवं मऊगंज जिले में कृषि वैज्ञानिकों के दलों द्वारा अभियान का संचालन किया गया। रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के बड़ागांव, बघमाड़ा व करौंदी, विकासखण्ड जवा के छदहना, बढ़ाछ व खारा, विकासखंड गंगेव के कैंदला, दुड़की व डिहिया में तथा मऊगंज जिले के विकासखंड हनुमना के टटिहारा, धौंसड व तंदुआवेलन में कृषि वैज्ञानिक दलों द्वारा अभियान का संचालन किया गया। कृषि वैज्ञानिक दल किसानों के बीच पहुंचे और उन्हें सलाह दी कि वे अपने खेतों की मिट्टी का परीक्षण अवश्य करवाएं, क्योंकि यह फसल उत्पादन बढ़ाने और मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिट्टी परीक्षण से मिट्टी में मौजूद पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा का पता चलता है, जिससे किसान उर्वरकों का संतुलित उपयोग कर सकते हैं। इससे न केवल फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि अनावश्यक उर्वरक उपयोग से होने वाली लागत में कमी और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलती है। कृषि वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि किसान अपने खेतों से मिट्टी के नमूने सही तरीके से एकत्र करें। इसके लिए खेत के 8-10 विभिन्न स्थानों से 15 सेंटीमीटर गहराई तक मिट्टी लेकर, उसे मिलाकर लगभग 500 ग्राम का नमूना तैयार करें। नमूना लेते समय खाद के ढेर, पेड़ों की छाया या जलभराव वाले क्षेत्रों से बचना चाहिए। यह नमूना स्थानीय कृषि विस्तार अधिकारी या नजदीकी मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में जमा करवाया जा सकता है। किसानों को सलाह दी गई है कि वे स्थानीय कृषि विस्तार अधिकारियों से संपर्क करें, जो मिट्टी के नमूने एकत्र करने और परीक्षण प्रक्रिया में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

वैज्ञानिकों ने जोर देकर कहा कि समय पर मिट्टी परीक्षण और उसकी रिपोर्ट के आधार पर उर्वरकों का उपयोग किसानों की आय बढ़ाने और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कृषि विभाग और वैज्ञानिकों ने किसानों से अपील करते हुए कहा कि वे इस सुविधा का लाभ उठाएं और अपने खेतों की मिट्टी का परीक्षण नियमित रूप से विशेष रूप से बुवाई से एक माह पहले, करवाएं। किसान अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी कृषि विभाग के कार्यालय या मृदा परीक्षण प्रयोगशाला से संपर्क कर सकते हैं। विकसित कृषि संकल्प अभियान के अन्तर्गत विकासखंड रायपुर कर्चुलियान के बड़ागांव में संयुक्त संचालक कृषि के यस नेताम के द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया।

अतिथि विद्वान आत्महत्या मामले में तीन गिरफ्तार

पति, सास और ससुर पर आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में अतिथि विद्वान डॉ. स्नेहल सिंह की संदिग्ध मौत के मामले में पुलिस ने शुक्रवार को बड़ी कार्रवाई की। कोलगवां थाना पुलिस ने मृतका के पति, सास और ससुर को आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पति अभिषेक सिंह उर्फ वैभव, सास माया सिंह और ससुर उमेश सिंह को पूछताछ के लिए बुलाया था। पूछताछ के बाद तीनों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। तीनों पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 108 (आत्महत्या के लिए उकसाना) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

घर में किया था सुसाइड: 26 मई को डॉ. स्नेहल सिंह का शव शुक्ला बर्दडीह स्थित घर में फांसी के फंदे पर लटका मिला था। प्राथमिक जांच में मामला आत्महत्या का माना गया, लेकिन मृतका के बेटे ने पिता पर गंभीर आरोप लगाए थे, जिसके बाद जांच का दायरा बढ़ा। वहीं, गुरुवार को एफएसएल टीम ने मौके की दोबारा जांच की थी, जिसमें घर में खून के धब्बे मिले।

कपड़े पसंद नहीं आने पर खरीदने से मना किया तो बुजुर्ग को पीटा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना शहर में शुक्रवार दोपहर स्टेशन रोड पर एक कपड़ा दुकान में बुजुर्ग ग्राहक से मारपीट का मामला सामने आया है। दुकानदार पिता-पुत्र ने मिलकर 61 वर्षीय बुजुर्ग की पिटाई कर दी। यह पूरी घटना राहगीरों के कैमरे में कैद हो गई और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।

जानकारी के मुताबिक, महदेवा निवासी राजकुमार तिवारी कपड़े खरीदने स्टेशन रोड स्थित श्री जलाराम दुकान पहुंचे थे। वे काफी देर तक कपड़े देखते रहे, लेकिन पसंद नहीं आने पर खरीदने से मना कर दिया। इस पर दुकान मालिक चित्रेश ठक्कर और उनके बेटे हिमांशु ठक्कर से बहस हो गई।

जब बुजुर्ग राजकुमार दुकान से बाहर निकलने लगे, तभी पिता-पुत्र ने उन पर हमला कर दिया। आसपास के दुकानदारों और राहगीरों ने बीच-बचाव कर मामला शांत कराया। बुजुर्ग की शिकायत पर सिटी कोतवाली पुलिस ने आरोपी चित्रेश और हिमांशु के खिलाफ मारपीट का केस दर्ज कर लिया है। टीआई रावेंद्र द्विवेदी के अनुसार दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है और मामले की जांच जारी है।

सीवरेज एवं जलप्रदाय परियोजनाओं का मुख्य अभियंता ने किया निरीक्षण

कार्य में देरी पर जताई कड़ी नाराज़गी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड के रीवा प्रोजेक्ट इम्प्लीमेंटेशन यूनिट के अंतर्गत संचालित सीवरेज एवं जलप्रदाय परियोजनाओं का निरीक्षण मुख्य अभियंता शैलेंद्र शुक्ला द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान शुक्ला मैहर नगर के वार्ड क्रमांक 9 स्थित सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का अवलोकन किया। उन्होंने कार्य की प्रगति पर असंतोष व्यक्त करते हुए इसे शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए।

जीआईएस मैपिंग कर जीटी कंस्ट्रक्शन का कार्य प्राथमिकता से आरंभ करने के भी निर्देश दिए गए। इससे पहले शुक्ला ने कोठी, कोटर, जैतवारा और बिरसिंहपुर के लिए निर्माणाधीन परियोजना जल प्रदाय परियोजना का निरीक्षण किया। गोरैया में प्रस्तावित इंटेक वेल के निर्माण की धीमी गति पर नाराज़गी व्यक्त करते हुए उन्होंने स्पष्ट कहा कि परियोजना के प्रमुख अवयवों में हो रही देरी अस्वीकार्य है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इंटेक वेल हेतु प्रस्तावित एप्रोच ब्रिज का कार्य अब तक प्रारंभ नहीं हुआ है, जो पूरी परियोजना को प्रभावित कर सकता है। निरीक्षण के अगले चरण में कोटर टाउन में निर्माणाधीन वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का जायज़ा लिया गया। यह परियोजना कोठी, कोटर, जैतवारा और बिरसिंहपुर नगर परिषदों को जल आपूर्ति के उद्देश्य से विकसित की जा रही है। निरीक्षण के उपरांत शुक्ला ने संविदाकार को दो दिवस के भीतर आगामी कार्यों हेतु विस्तृत माइक्रो प्लान प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। साथ ही संबंधित अधिकारियों को साप्ताहिक कार्य प्रगति की नियमित समीक्षा करने के आदेश दिए।

मऊगंज जनपद में ग्रामीण विकास योजना की समीक्षा बैठक संपन्न

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह द्वारा जनपद पंचायत मऊगंज में जल गंगा अभियान अंतर्गत समस्त ग्राम पंचायत के सचिव,ग्राम रोजगार सहायक की समीक्षा बैठक ली गई।

बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान अन्तर्गत ग्राम पंचायतवार समीक्षा की गई। खेत तालाब, डगवेल रिचार्ज, नरेगा लेवर नियोजन के दौरान कर्यो में प्रगति लाए जाने के निर्देश दिए गए। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की समीक्षा में आवास योजना के सर्वे, जियो टैग, आवास पूर्णता एवं मजदूरों की मजदूरी का भुगतान समय सीमा में कराए जाने के निर्देश सीईओ जिला पंचायत द्वारा दिये गये । समग्र सीडिग एवं जिनकी ईकेवायसी अभी तक नही हुई है अभियान चलाकर समग्र सीडिंग एवं ईकेवासी कराए जाने के निर्देश सचिव/ग्राम रोजगार सहायक को दिए गए । समीक्षा बैंठक की सूचना उपरांत अनुपस्थित सचिव गीता पटेल ग्राम पंचायत करहिया, विजय सिंह ग्राम पंचायत पकरा, जायलाल पटेल ग्राम पंचायत डिघवार 391, रामभजन साकेत ग्राम पंचायत डगदौया 2, सौखीलाल सोधिया ग्राम पंचायत मिसिरगांव को निलंबित करने के निर्देश सीईओ जिला पंचायत पंचायत ने दिये। समीक्षा बैंठक योजनाओं में न्यूनतम प्रगति होने के कारण सचिव श्यामसुन्दर पटेल ग्राम पंचायत उमरी, रामजनम पाण्डेय ग्राम पंचायत पनिगवा, संतोष पटेल ग्राम पंचायत नौढ़िया, दिग्विजय सिंह ग्राम पंचायत लौरकला को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया। बैठक में ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।